खण्ड-क अपठित बोध

अध्याय - 1 अपठित गद्यांश

स्मरणीय बिन्दु

अपठित गद्यांश वह लेख है, जो पहले न पढ़ा हो। किसी भी गद्यांश को बिना किसी की सहायता के पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित गद्यांश का लक्ष्य है।

अपठित गद्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- छात्रों को ध्यानपूर्वक गद्यांश को दो-तीन बार पढ़ना चाहिए।
- गद्यांश के भावार्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए।
- गद्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें जिनमें किन्हीं प्रश्नों के उत्तर संभव हों।
- यदि गद्यांश में से शब्दों के अर्थ पूछे गए हों तो प्रसंगानुसार ही उनके अर्थ लिखें।
- शीर्षक देते समय गद्यांश के मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द-समूह अथवा वाक्यांश चुनना चाहिए।
- शीर्षक कम से कम शब्दों का होना चाहिए।

❑❑

अध्याय - 2 अपठित पद्यांश

स्मरणीय बिन्दु

अपठित काव्यांश वह लेख है, जो पहले न पढ़ा हो। किसी भी काव्यांश को बिना किसी की सहायता से पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित काव्यांश का लक्ष्य है।

अपठित काव्यांश से सम्बन्धित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- काव्यांश के भावार्थ को समझने का प्रयास करना चाहिए।
- काव्यांश के उन भागों को रेखांकित करते चलें जिनमें किन्हीं प्रश्नों के उत्तर संभव हों।
- यदि काव्यांश में से शब्दों के अर्थ पूछे गए हों तो प्रसंगानुसार ही उनके अर्थ लिखें।
- शीर्षक देते समय काव्यांश के मूल-भाव को व्यक्त करने की क्षमता रखने वाला शब्द या शब्द समूह अथवा वाक्यांश चुनना चाहिए।
- शीर्षक कम-से-कम शब्दों का होना चाहिए।

❑❑

खण्ड-ख व्याकरण-बोध

अध्याय - 1 रचना के आधार पर वाक्य भेद

स्मरणीय बिन्दु

वाक्य—ऐसा सार्थक शब्द-समूह जो व्यवस्थित हो तथा पूरा आशय प्रकट कर सके, वाक्य कहलाता है। उदाहरणार्थ—

श्री कृष्ण ने धर्म की संस्थापना की।

वाक्य के अंग (घटक)—जिन अवयवों को मिलाकर वाक्य की रचना होती है, उन्हें वाक्य के अंग कहते हैं।

वाक्य के मूल एवं अनिवार्य अंग हैं—कर्ता एवं क्रिया। इनके बिना वाक्य की रचना संभव नहीं है।

जैसे—(i) गीता गाएगी (ii) सोहन नाचेगा।

अत: कर्ता और क्रिया वाक्य के अनिवार्य घटक हैं। इनके अतिरिक्त वाक्य के अन्य घटक भी होते हैं।

जैसे—विशेषण, क्रिया विशेषण आदि। ये घटक ऐच्छिक घटक कहलाते हैं।

कर्ता और क्रिया पक्ष के अनुसार वाक्य के दो पक्ष होते हैं—

(i) उद्देश्य—वाक्य में जिसके बारे में कुछ कहा जाए, वही उस वाक्य का उद्देश्य है। इसके अन्तर्गत कर्ता तथा कर्ता का विस्तार (विशेषण, सम्बन्धबोधक, भावबोधक आदि) आ जाते हैं।

(ii) विधेय—उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाए। वह 'विधेय' है। इसके अन्तर्गत क्रिया, क्रिया-विस्तार, कर्म, कर्म-विस्तार आदि आ जाता है।

उद्देश्य और विधेय के योग से ही वाक्य-संरचना के स्तर पर पूर्ण होता है तथा किसी भाव अथवा विचार को व्यक्त कर पाता है।

	उद्देश्य	विधेय
1.	सुमन	अध्यापिका है।
2.	छात्रावास में रहने वाले सभी लड़के	सिनेमा देखने जा रहे हैं।
3.	मैं	दिल्ली में रहने वाली सखी से मिली।

उद्देश्य तथा उद्देश्य का विस्तार

वाक्य	उद्देश्य	उद्देश्य का विस्तार	विधेय
1. वीर हनुमान ने लंका में आग लगा दी।	हनुमान ने	वीर	लंका में आग लगा दी
2. तेजस्वी चाणक्य मंत्री बनने में सफल रहा।	चाणक्य	तेजस्वी	मंत्री बनने में सफल रहा।

विधेय तथा विधेय का विस्तार

वाक्य	उद्देश्य	विधेय	विधेय का विस्तार
उपर्युक्त ही	वीर हनुमान ने तेजस्वी चाणक्य	आग लगा दी सफल रहा	लंका में मंत्री बनने में

वाक्य के भेद—वाक्य के भेद दो आधार पर होते हैं—

1. रचना के आधार पर
2. अर्थ के आधार पर

टिप्पणी—आपके पाठ्यक्रम में केवल रचना के आधार पर वाक्य के भेद-सम्बन्धी प्रश्न पूछे जाएँगे।

रचना के आधार पर वाक्य भेद—रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद होते हैं—

1. सरल वाक्य

2. संयुक्त वाक्य

3. मिश्र वाक्य

1. सरल वाक्य—जिन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया होती है और एक ही उद्देश्य और विधेय होता है, उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे— **(i)** वर्षा हो रही है।

(ii) बच्चे मैदान में खेल रहे हैं।

(iii) मैं दिन-भर सोया।

(iv) उन्होंने हद पार कर दी होगी।

(v) पाकिस्तान कई वर्षों से आतंकवाद फैलाए चला जा रहा है।

उपरोक्त सभी वाक्यों में मुख्य क्रिया एक ही है। आकार में छोटे-बड़े होते हुए भी रचना की दृष्टि से ये वाक्य सरल वाक्य हैं। सरल वाक्यों को साधारण वाक्य के नाम से भी जाना जाता है।

मुख्य क्रिया के अलावा जो पद क्रिया के सहायक बनते हैं, उन्हें सहायक क्रिया कहते हैं।

2. संयुक्त वाक्य—जब दो या दो से अधिक स्वतन्त्र उपवाक्य योजक शब्दों (समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय) द्वारा जुड़े हुए हों, उन्हें संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे— **(i)** बादल गरजे और बिजली चमकने लगी।

(ii) गंगा तट पर नहा लेना या मुँह धो लेना।

(iii) वर्षा होने वाली है इसलिए जल्दी घर आ जाना।

(iv) चुपचाप चले जाओ, नहीं तो बहुत बुरा होगा।

(v) बोलो परन्तु कटु सत्य न बोलो।

(vi) ठीक से खाओ अथवा रहने दो।

उपर्युक्त उदाहरणों में वाक्य 'या', 'इसलिए', 'नहीं तो', 'परन्तु', 'अथवा' अव्यय शब्दों से जुड़े हुए हैं। योजकों की सहायता से जुड़े होने के कारण ये संयुक्त वाक्य कहलाते हैं।

पहचान—संयुक्त वाक्य और, तथा, एवम्, इसलिए, अत:, नहीं तो, अन्यथा, वरना, या, किन्तु, परन्तु, मगर, बल्कि, फलत:, परिणाम स्वरूप आदि समानाधिकरण समुच्चयबोधक से जुड़े रहते हैं। यदि इन योजकों को हटा दिया जाए, तो प्रत्येक संयुक्त वाक्य के दो-दो स्वतन्त्र वाक्य बन जाएँगे।

3. मिश्रित वाक्य—जिन वाक्यों की रचना में एक प्रधान उपवाक्य तथा शेष अन्य उस पर आश्रित उपवाक्य होते हैं, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** जब बादल गरजे तब बिजली चमकने लगी।

(ii) अध्यापक ने कहा कि कल विद्यालय बंद रहेगा।

(iii) मेरे पास एक पेन है जो पिताजी ने दिया था।

(iv) तुम ऐसे बोलो, जैसे मैं बता रहा हूँ।

(v) वह इसलिए आयी थी ताकि मुझे बेवकूफ बना सके।

उपरोक्त वाक्यों में रेखांकित अंश 'प्रधान वाक्य' जबकि शेष भाग 'गौण वाक्य' है।

पहचान—प्राय: मिश्र वाक्य 'कि', 'जो-वह'—'वही-जिस', 'क्योंकि', जिससे, अर्थात्, ज्यों ही, जब, जैसा, जिस तरह, जैसे, जहाँ, जिधर जिस जगह, जितना, जैसे—जैसे, ताकि, यद्यपि, यदि आदि व्यधिकरण समुच्चयबोधकों से जुड़े रहते हैं।

आश्रित उपवाक्य के भेद—मिश्र वाक्य में प्रयुक्त होने वाले गौण उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—

(क) संज्ञा उपवाक्य—जो उपवाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या संज्ञा पदबंध के स्थान पर प्रयुक्त हुआ है। उसे संज्ञा उपवाक्य कहते हैं। जैसे—राम ने कहा कि हम लड़ाई नहीं चाहते।

टिप्पणी—'राम ने कहा' उपवाक्य के कर्म के रूप में 'हम लड़ाई नहीं चाहते' उपवाक्य प्रयुक्त हुआ है। अत: यह संज्ञा उपवाक्य है।

(ख) विशेषण उपवाक्य—जो आश्रित उपवाक्य प्रधान उपवाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण उपवाक्य कहते हैं।

जैसे— **(i)** यह वही आदमी है जिसने तुम्हें मारा था।

(ii) यह वही छात्र है जो मुझसे पढ़ा था।

टिप्पणी—यहाँ 'जिसने तुम्हें मारा था' तथा 'जो मुझसे पढ़ा था' उपवाक्य क्रमशः आदमी तथा छात्र की विशेषता बता रहा है। विशेषण उपवाक्य का प्रारम्भ जो, जिसने, जहाँ, जिससे, जिनको, जिनके लिए आदि शब्दों से होता है।

(ग) क्रिया विशेषण उपवाक्य—जिस आश्रित उपवाक्य से प्रधान उपवाक्य की क्रिया की विशेषता पता चलती है, उसे क्रिया-विशेषण उपवाक्य कहते हैं।

जैसे—**(i)** जब तुम मुझसे मिले थे, तब मैं छोटा था।

(ii) यदि वर्षा अच्छी होगी, तो फसल अच्छी होगी।

टिप्पणी—रेखांकित उपवाक्य क्रमशः 'था' तथा 'होगी' क्रिया की विशेषताएँ समय व शर्त के रूप में बता रहे हैं। अतः ये क्रिया विशेषण उपवाक्य हैं।

❑❑

अध्याय - 2 वाच्य

स्मरणीय बिन्दु

परिभाषा—क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता है कि क्रिया का विधायक कर्ता है, कर्म है या भाव है, वह वाच्य कहलाता है। जैसे—

- वह पत्र लिखता है। (कर्तृवाच्य)
- पत्र उसके द्वारा लिखा जाता है। (कर्मवाच्य)
- उससे पत्र लिखा जाता है। (भाववाच्य)

वाच्य के भेद—वाच्य के दो भेद होते हैं—

(1) कर्तृवाच्य

(2) अकर्तृवाच्य

(1) कर्तृवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का रूप कर्ता के अनुसार परिवर्तित होता है, उसे कर्तृवाच्य कहते हैं। इसमें कर्ता प्रधान होता है। जैसे—**(i)** राधा नाचती है। **(ii)** लड़का रो रहा है।

(2) अकर्तृवाच्य—जिन वाक्यों में कर्ता प्रमुख नहीं होता है, उसे अकर्तृवाच्य कहते हैं।

अकर्तृवाच्य के दो भेद हैं-

(i) कर्मवाच्य—जिस वाक्य में क्रिया का व्यापार कर्म के साथ हो, वहाँ कर्म वाच्य होता है। कर्म की प्रधानता के कारण क्रिया का लिंग, वचन एवं पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं। कर्ता का लोप हो जाता है या कर्ता के बाद 'से' अथवा 'के द्वारा' का प्रयोग होता है।

जैसे— **(i)** राम द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है।

(ii) राजा द्वारा न्याय किया गया।

(iii) पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।

(ii) भाववाच्य—जिस वाक्य में कर्ता या कर्म की प्रधानता न होकर भाव की प्रधानता हो, उसे भाववाच्य कहते हैं। ऐसे वाक्यों में क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिंग, अकर्मक तथा अन्य पुरुष में रहती है।

जैसे— **(i)** बच्चों से पढ़ा जाएगा।

(ii) मुझसे शोर में सोया नहीं जाएगा।

वाच्य परिवर्तन

कर्तृवाच्य का कर्मवाच्य में परिवर्तन—

(1) कर्तृवाच्य से कर्मवाच्य बनाते समय कर्ता के साथ 'से', के द्वारा 'या' द्वारा शब्द लगाए जाते हैं। जैसे—

(i) मोहन पत्र लिखता है। **(ii)** मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।

(iii) माँ ने कपड़े धोए। **(iv)** माँ द्वारा कपड़े धोए गए।

(2) कर्म के साथ लगी विभक्ति को हटा दिया जाता है। जैसे—

(i) माला ने गुड़िया को फेंक दिया। **(ii)** माला द्वारा गुड़िया फेंक दी गई।

(iii) कमलेश ने घर साफ किया। **(iv)** कमलेश द्वारा घर साफ किया गया।

(3) कर्तृवाच्य की क्रिया को सामान्य भूतकाल की क्रिया में बदल दिया जाता है और उसके काल को कर्म के वचनानुसार बदला जाता है। जैसे—

(i) मोहन पत्र लिखता है। **(ii)** मोहन से पत्र लिखा जाता है **अथवा** मोहन द्वारा पत्र लिखा जाता है।

(iii) माला ने गुड़िया को फेंक दिया। **(iv)** माला द्वारा गुड़िया को फेंक दिया गया।

कर्तृवाच्य से भाव वाच्य में परिवर्तन—

(1) कर्ता के आगे 'से' लगा दिया जाता है। जैसे—

(i) छात्र पढ़ेंगे — छात्रों से पढ़ा जाएगा **या** छात्रों द्वारा पढ़ा जाएगा।

(ii) पक्षी आकाश में उड़ते हैं — पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है **या** पक्षियों द्वारा आकाश में उड़ा जाता है।

(2) मुख्य क्रिया में सामान्य भूतकाल की क्रिया को एकवचन में बदलकर 'जाना' धातु के एकवचन, पुल्लिंग, अन्य पुरुष रूप को लगा देते हैं। जैसे—

(i) छात्र पढ़ेंगे — छात्रों से पढ़ा जाएगा **या** छात्रों द्वारा पढ़ा जाएगा।

(ii) पक्षी आकाश में उड़ते हैं — पक्षियों से आकाश में उड़ा जाता है।

कर्मवाच्य का प्रयोग—

1. जब निश्चित रूप से कर्ता कौन है, यह न पता हो या भयवश या संकोचवश न बताना चाहते हों। जैसे—
   पत्र लिखा जा चुका है।
   उसकी चाबी चुरा ली गई है।
2. जब कोई कार्य स्वयं किया हो, किन्तु बिना आपकी इच्छा के हुआ हो। जैसे—माला खिंची और टूट गई।
3. जब कर्ता व्यक्ति न होकर व्यवस्था हो, जैसे—
   सरकार द्वारा इस दिशा में उचित कदम उठा लिए गए हैं।
4. सूचना, विज्ञप्ति आदि में जहाँ कर्ता निश्चित न हो, जैसे—
   चौराहे पर इकट्ठा होने पर सजा दी जाएगी।
5. अधिकार या अहंकार दिखाने के लिए, जैसे—
   दोषी को कोड़े मारे जाएँ।
6. कानूनी या कार्यालयी भाषा में, जैसे—
   आपका ऋण स्वीकृत किया जाता है।
7. असमर्थता जताने के लिए, जैसे—
   अब और नहीं चला जाता।

भाववाच्य का प्रयोग—

1. असमर्थता या विवशता बताने के लिए, जैसे—
   अब नहीं खाया जाता।
2. जब 'नहीं' का प्रयोग न हो, तो मूल कर्ता जन साधारण हो, जैसे—
   वर्षा में छाते का प्रयोग किया जाता है।

❑❑

अध्याय - 3 पद-परिचय

स्मरणीय बिन्दु

पद—शब्द जब तक कोश में रहता है, शब्द कहलाता है, परन्तु वाक्य में प्रयोग करने पर यह व्याकरणिक नियमों से आबद्ध हो जाता है, तब उसे पद कहते हैं।

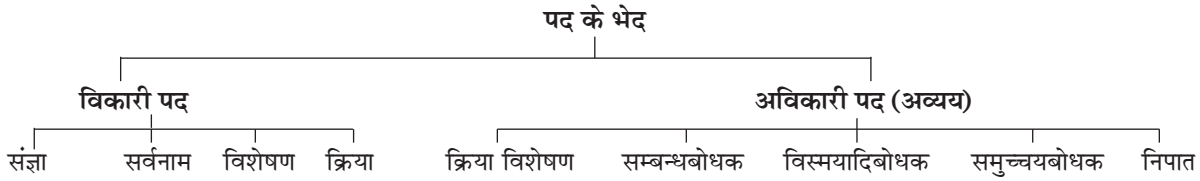

वाक्यों में आने वाले पदों का व्याकरणिक दृष्टि से परिचय देना पद-परिचय कहलाता है।

पद का नाम	परिचय देने के लिए आवश्यक बातें
1. विकारी	
(i) संज्ञा	संज्ञा के भेद (व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक), वचन (एकवचन, बहुवचन), लिंग (पुल्लिंग, स्त्रीलिंग) कारक
(ii) सर्वनाम	(कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन) क्रिया के साथ सम्बन्ध। सर्वनाम के भेद (पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, प्रश्नवाचक, निजवाचक, सम्बन्धवाचक), पुरुष (उत्तम, मध्यम, अन्य), लिंग, वचन, क्रिया के साथ सम्बन्ध।
(iii) विशेषण	विशेषण के भेद (गुणवाचक, परिमाणवाचक, संख्यावाचक, सार्वनामिक), लिंग, वचन, विशेष्य।
(iv) क्रिया	क्रिया के भेद (अकर्मक, सकर्मक), लिंग, वचन, पुरुष, काल (भूत, वर्तमान, भविष्यत्), वाच्य (कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य) कर्ता, कर्म का संकेत।
2. अविकारी अव्यय	क्रिया विशेषण के भेद (कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक, परिमाणवाचक) जिस क्रिया की विशेषता बता रहा हो उसका संकेत, समुच्चयबोधक, सम्बन्धबोधक, विस्मयादिबोधक, निपात, उनका सम्बन्ध।

उदाहरणार्थ—

1. **संज्ञा पद-परिचय**
   राधा कक्षा में बैठी है।
   राधा—संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'बैठी है' क्रिया की कर्ता।
   कक्षा—संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'बैठी है' क्रिया से सम्बद्ध।
2. **सर्वनाम पद-परिचय**
   मैं खाना खाकर पढ़ूँगा।
   मैं—सर्वनाम, उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम, पुल्लिंग, एकवचन, कर्ता कारक, 'पढ़ूँगा', क्रिया का कर्ता।
3. **विशेषण पद-परिचय**
   नीली—चुनरी धूप में सूख रही थी।
   नीली—विशेषण, गुणवाचक विशेषण, स्त्रीलिंग, एकवचन, 'चुनरी' संज्ञा की विशेषता बता रहा है।
4. **क्रिया पद-परिचय**
   लड़कियाँ बातें **कर रही हैं।**
   कर रही हैं—(i) क्रिया, अकर्मक क्रिया, वर्तमान काल, स्त्रीलिंग, बहुवचन, कर्तृवाच्य, लड़कियाँ कर्ता की क्रिया।
5. **क्रिया-विशेषण पद-परिचय**
   आकांक्षा **धीरे-धीरे** चल रही थी।
   धीरे-धीरे—क्रिया विशेषण, रीतिवाचक, 'चल रही' क्रिया की रीति की विशेषता।

6. **सम्बन्धबोधक पद-परिचय—**भावना **के बदले** सुमन दिल्ली चली गई।

   के बदले—सम्बन्धबोधक, विनिमय वाचक, भावना और सुमन में सम्बन्ध सूचक।

7. **समुच्चयबोधक पद-परिचय—**साधना बीमार थी **इसलिए** विद्यालय नहीं आई।

   इसलिए—समुच्चयबोधक, परिणामदर्शक समानाधिकरण, साधना बीमार थी और विद्यालय नहीं आई उपवाक्यों को जोड़ने का कार्य, परिणाम स्पष्ट करना।

8. **विस्मयादिबोधक पद-परिचय—**

   वाह ! क्या दृश्य है ?

   वाह—विस्मयादिबोधक, प्रसन्नतासूचक, दृश्य का प्रशंसा सूचक पद।

❑❑

अध्याय - 4 रस

स्मरणीय बिन्दु

'जिसका आस्वादन किया जाए वही रस है।' काव्य को पढ़ने, सुनने पर जिस आनन्द की प्राप्ति होती है उसे रस कहते हैं। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र में रस के स्वरूप को स्पष्ट करते हुए रस की निष्पत्ति के सम्बन्ध में लिखा है **: विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रस निष्पत्ति** अर्थात् विभाव, अनुभाव तथा व्यभिचारी भाव के संयोग से रस की निष्पत्ति होती है।

रस के अंग

रस के प्रमुख अंग निम्नलिखित हैं—

(क) स्थायी भाव **(ख)** विभाव **(ग)** अनुभाव **(घ)** संचारी या व्यभिचारी भाव।

(क) स्थायी भाव—स्थायी भाव का सम्बन्ध रस से होता है। प्रत्येक रस का एक स्थायी भाव होता है।

	स्थायी भाव	**रस**
1.	रति	शृंगार
2.	शोक	करुण
3.	उत्साह	वीर
4.	हास	हास्य
5.	क्रोध	रौद्र
6.	भय	भयानक
7.	आश्चर्य	अद्‌भुत
8.	जुगुप्सा	वीभत्स
9.	निर्वेद	शान्त रसों की संख्या नौ ही मानी गयी है।
10.	वत्सलता	वात्सल्य रति (संतान विषयक रति)
11.	भगवद् विषयक रति	भक्ति (भगवद् विषयक रति)

इन दो को रति का एक ही भेद मानकर स्थायी भावों में बाद में स्थान देकर दो और रसों की परिकल्पना की गई है तब रसों की संख्या 11 हो जाती है।

1. **रति—**प्रेमी-प्रेमिका का एक-दूसरे के प्रति उत्पन्न प्रेम 'रति' कहलाता है।
2. **शोक—**किसी प्रिय वस्तु के नष्ट होने पर होने वाली व्याकुलता 'शोक' कहलाती है।
3. **उत्साह—**वह वृत्ति जो मनुष्य को किसी कार्य को तेजी से और शौर्यपूर्ण तरीके से करने के लिए प्रेरित करती है 'उत्साह' कहलाती है।
4. **हास—**रूप, वाणी, अंगों के विकारादि देखकर चित्त का प्रसन्नचित्त होना 'हास' कहलाता है।
5. **क्रोध—**किसी अपराध, अपमान, विवाद आदि से उत्पन्न विकार 'क्रोध' कहलाता है।
6. **भय—**हिंसक जीव-जन्तु, अपराध, भयंकर शब्द या रौद्र रूप देखकर मन में जो व्याकुलता होती है, उसे भय कहते हैं।
7. **आश्चर्य—**किसी अलौकिक वस्तु को देखने पर जो विकार उत्पन्न होता है, उसे 'आश्चर्य' कहते हैं।
8. **जुगुप्सा—**किसी अरुचिकर या घृणित वस्तु देखने पर जो भाव उत्पन्न होते हैं, उसे 'जुगुप्सा' कहते हैं।
9. **निर्वेद—**सांसारिक वस्तुओं के प्रति वैराग्य की उत्पत्ति के भाव को 'निर्वेद' कहते हैं।

10. वत्सलता—माता-पिता का संतान के प्रति सात्विक प्रेम 'वात्सल्य' कहलाता है।

11. भगवद्-विषयक रति—ईश्वर के प्रति अनुरक्ति के भाव को 'भगवद् विषयक रति' कहते हैं।

(ख) विभाव—जो व्यक्ति या पदार्थ दूसरे व्यक्ति के मन में स्थायी भाव को जाग्रत या उद्दीप्त करते हैं, उन्हें 'विभाव' कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं—

(i) आलम्बन विभाव—जिसे देखकर मन में भाव जाग्रत होते हैं, उन्हें 'आलम्बन विभाव' कहते हैं।

(ii) उद्दीपन विभाव—स्थायी भाव को उद्दीप्त करने वाला कारण 'उद्दीपन विभाव' कहलाता है।

(ग) अनुभाव—रस की उत्पत्ति को पुष्ट करने के वे भाव जो विभाव के बाद उत्पन्न होते हैं, उन्हें 'अनुभाव' कहते हैं।

(घ) संचारी भाव—जो भाव स्थायी भाव को अधिक पुष्ट करते हैं, उन हाव-भावों को संचारी भाव कहते हैं। इनकी संख्या 33 होती है, जो इस प्रकार है—

1. निर्वेद	**2.** आवेग	**3.** दैन्य	**4.** श्रम	**5.** मद	**6.** जड़ता
7. उग्रता	**8.** मोह	**9.** विबोध	**10.** स्वप्न	**11.** अपस्मार	**12.** गर्व
13. मरण	**14.** आलस्य	**15.** अमर्ष	**16.** निद्रा	**17.** अवहित्था	**18.** उत्सुकता/औत्सुक्य
19. उन्माद	**20.** शंका	**21.** स्मृति	**22.** मति	**23.** व्याधि	**24.** संत्रास
25. लज्जा	**26.** हर्ष	**27.** असूया	**28.** विषाद	**29.** धृति	**30.** चपलता/चापल्य
31. ग्लानि	**32.** चिन्ता	**33.** वितर्क			

रसों के प्रकार

व्याकरणाचार्य रसों की संख्या मूलत: 9 मानते हैं, परन्तु बाद में भक्ति व वात्सल्य को सम्मिलित किए जाने पर इनकी संख्या 11 हो गई है।

(1) शृंगार रस—नायक-नायिका के मध्य रति या प्रेम जो रस उत्पन्न करता है, उसे शृंगार रस कहते हैं।

स्थायी भाव—रति

आलम्बन विभाव—नायक या नायिका।

उद्दीपन विभाव—आलंबन का सौन्दर्य, प्रकृति, रमणीयता, वसन्त ऋतु आदि।

अनुभाव—अवलोकन, स्पर्श, आलिंगन, चुंबन, कटाक्ष, अश्रु आदि।

संचारी भाव—हर्ष, जड़ता, अभिलाषा, चंचलता, आशा, स्मृति, रुदन, आवेग, उन्माद आदि।

शृंगार के भेद—शृंगार रस के दो भेद हैं; संयोग शृंगार तथा वियोग शृंगार।

(i) संयोग शृंगार—इसमें नायक-नायिका का पारस्परिक मिलन होता है।

उदाहरणार्थ— ''कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भवन में करत हैं, नैननु ही सौं बात।"

(ii) वियोग शृंगार—जब नायक-नायिका मिलन के अभाव में दु:खी हो तो, उसे वियोग शृंगार कहते हैं। यथा—सीता का हरण हो जाने के बाद राम का वियोग निम्न पंक्तियों से व्यक्त होता है।

उदाहरणार्थ— "हे खग तुम मृग! हे मधुकर सैनी।
तुम देखी सीता मृगनैनी!"

(2) करुण रस—जब किसी प्रिय वस्तु के नाश से या अनिष्ट की आशंका से दु:ख अथवा क्षोभ उत्पन्न होता है, तो उसे 'करुण रस' कहते हैं।

स्थायी भाव—शोक।

आलंबन विभाव—धन, ऐश्वर्य, प्रिय वस्तु का नष्ट होना आदि।

उद्दीपन विभाव—आलंबन का दाह-कर्म, इष्ट के गुण, उससे सम्बन्धित कुछ।

अनुभाव—भूमि पर गिरना, छाती पीटना, रुदन, प्रलाप, मूर्च्छा, कंपन आदि।

संचारी भाव—निर्वेद, मोह, अपस्मार, व्याधि, ग्लानि, स्मृति, श्रम, विषाद, जड़ता, दैन्यता।

उदाहरण— "अभी तो मुकुट बँधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले थे चुम्बन शून्य कपोल,
हाय! रुक गया यहीं संसार, बना सिंदूर अंगार
वातहत लतिका वह सुकुमार पड़ी है छिन्नाधार!''

(3) हास्य रस—किसी व्यक्ति अथवा किसी पदार्थ का अनोखा विकृत रूप, किसी विशेष प्रकार की वेशभूषा, वाणी, चेष्टा आदि देखकर उत्पन्न हुए विनोद या हास्य के भाव को 'हास्य रस' कहते हैं।

स्थायी भाव—हास।

आलंबन विभाव—विकृत वेशभूषा, विचित्र सा हाव-भाव, हास्य जनक चेष्टाएँ।

उद्दीपन विभाव—आलंबन की अनोखी आकृति, वाणी, चेष्टाएँ आदि।

अनुभाव—आश्रय की मुस्कान, नेत्रों का मिचमिचाना, अट्टहास।

संचारी भाव—हर्ष, आलस्य, निद्रा, चपलता, उत्सुकता आदि।

उदाहरण— विन्ध्य के बासी, उदासी, तपो ब्रतधारी महा बिनु नारि दुखारे।
गौतम तीय तरी तुलसी सो कथा सुनि भे मुनिबृन्द सुखारे॥
ह्वैं हैं सिला सब चन्द्रमुखी परसे पद मंजुल कंज तिहारे।
कीन्हीं भली रघुनायक जू! करुना करि कानन के पगु धारे॥

(4) रौद्र रस—जब दूसरे पक्ष द्वारा किए गए अपमान या गुरुजन आदि की निन्दा से क्रोध का भाव उत्पन्न होता है, उसे 'रौद्र रस' कहते हैं।

स्थायी भाव—क्रोध।

आलंबन विभाव—विपक्षी, शत्रु, अशिष्ट व्यक्ति।

उद्दीपन विभाव—विपक्षी शत्रु अथवा अशिष्ट व्यक्तियों के वाक्य अथवा कार्य।

अनुभाव—नेत्रों का लाल होना, भौंहें टेढ़ी होना, दाँत पीसना, होंठ चबाना, कठोर दृष्टि से देखना, भुजाओं का चलाना, गर्जन-तर्जन, शस्त्र उठाना आदि।

संचारी भाव—अमर्ष, मोह, मद, उग्रता, स्मृति, आवेश, चपलता आदि।

उदाहरण— "माखै लखन कुटिल भई भौंहें।
रद-पट फरकत नयन रिसौंहें॥"

(5) वीर रस—युद्ध या दुष्कर कार्य को करने के लिए हृदय में जो उत्साह जाग्रत होता है, उसमें वीर-रस की निष्पत्ति होती है। 'वीर रस' चार प्रकार के होते हैं—(क) युद्धवीर, (ख) दानवीर, (ग) धर्मवीर, (घ) दयावीर।

(क) युद्धवीर—जो युद्ध में वीरता और उत्साह का प्रदर्शन करते हैं।

स्थायी भाव—युद्ध-उत्साह।

आलम्बन विभाव—शत्रु तथा शत्रु सेना आदि।

अनुभाव—भुजा-फड़कना, आक्रमण या प्रहार करना, गर्वोक्ति, अस्त्र-शस्त्र।

संचारी भाव—हर्ष, आवेग, उग्रता, औत्सुक्य आदि।

उदाहरण— क्रुद्ध, दशानन बीस भुजानि सो लै कपि रीछ अनी सर बट्टत।
लच्छन-तच्छन रक्त किए दृग लच्छ विपच्छन के सिर कट्टत॥
मारु पछारु पुकारे दुहूँ, दल, रुण्ड झपट्टि दपट्टि लपट्टत।
रुण्ड लरै भट मत्थनि लुट्टत जोगिनि खप्पर ठट्टनि ठट्टत।

(ख) दानवीर—याचक को दान में सर्वस्व अर्पण करते हुए भी जिसके हृदय में क्षोभ नहीं आनन्द उत्पन्न हो, उसे 'दानवीर' कहते हैं।

स्थायी भाव—दान देने का उत्साह।

आलम्बन विभाव—दानपात्र की सत्पात्रता, अपने कर्त्तव्य का ज्ञान, यश और नाम की इच्छा, तीर्थ स्थान, साधु-समागम आदि।

अनुभाव—दानपात्र की इज्ज़त करना, चेहरे पर मुस्कराहट, उदारता।

संचारी भाव—हर्ष, धैर्य, स्मरण आदि।

उदाहरण— "मुठी तीसरी भरत ही, रुक्मनि पकरी बाँह।
ऐसे तुम्हें कहा भई सम्पत्ति की अनचाह॥"

(ग) दयावीर—दु:खी को देखकर दया के वशीभूत होकर उसके लिए कुछ करने का हृदय में साहस उत्पन्न होने के भाव का नाम 'दयावीर' है।

स्थायी भाव—दया करने का उत्साह।

आलम्बन विभाव—दीन, आर्त, दु:खी, दया के पात्र आदि।

उद्दीपन विभाव—पात्र की दीनता, कष्ट, आर्तनाद आदि।

अनुभाव—मधुर शब्द, आश्वासन, वाक्य आदि।

संचारी भाव—पुलक, धृति, चंचलता, उत्कंठा आदि।

उदाहरण— 'दीन-हीन सुहृदय सुदामा की अवाई सुनै।
दीन-बंधु पहलि दया सों मया पागे हैं।
आई पौरि-पौरि देखि दृगन अलेख दशा।
धीर त्यागी और हूँ विशेष दु:ख दागे हैं।"

(घ) धर्मवीर—धार्मिक कार्यों को करने के लिए उत्साहित होना तथा आनंद अनुभव करते हुए कार्य में लगना 'धर्मवीर' होना कहलाता है।

स्थायी भाव—धर्म सम्बन्धी उत्साह।

आलंबन विभाव—धर्म ग्रन्थों के वचनों में श्रद्धा, धर्म के प्रति निष्ठा आदि।

उद्दीपन विभाव—धर्म ग्रन्थों का पाठन तथा श्रवण, गुरुजनों के उपदेश, धर्म कार्य का फल, प्रशंसा आदि।

अनुभाव—धर्म रक्षा एवं अधर्म नाश के उपाय, धर्मानुकूल आचरण आदि।

संचारी भाव—हर्ष, क्षमा, मति आदि।

उदाहरण— आजु हौं टेकधरी मनमाहिं न छाड़ियो याहि करो बहुतेरो।
धाक है है युधिष्ठिर की धन-धाम तजौं पै हो बोल न कैरो॥

(6) भयानक रस—किसी भयानक अथवा अनिष्टकारी वस्तु को देखने, उसका वर्णन सुनने से उत्पन्न भय का भाव 'भयानक रस' कहलाता है।

स्थायी भाव—भय।

आलंबन विभाव—भयानक जीव-जन्तु, भयानक दृश्य, निर्जन स्थान, वन, डाकू, चोर, शत्रु आदि।

उद्दीपन विभाव—भयंकर दृश्य, हिंसक जीवों की भयानक चेष्टाएँ, भयप्रद निर्जनता आदि।

अनुभाव—पसीना आना, आवाज न निकलना, रोमांच, मूर्च्छा, पलायन, रोना-चिल्लाना, कंपन आदि।

संचारी भाव—चिंता, शोक, त्रास, ग्लानि, मरण, दैन्य, संभ्रम आदि।

उदाहरण— "एक ओर अजगरहि लखि, एक ओर मृगराय।
विकल बटोही बीच ही, पर्‌यो मूर्च्छा खाय॥"

(7) वीभत्स रस—घृणित वस्तुओं को देखकर या उनका वर्णन सुनकर मन में उत्पन्न होने वाली घृणा या ग्लानि का भाव 'वीभत्स रस' कहलाता है।

स्थायी भाव—जुगुप्सा।

आलंबन विभाव—दुर्गंधयुक्त माँस, रक्त, अस्थि पंजर, श्मशान आदि।

उद्दीपन विभाव—रक्त, माँस आदि का सड़ना, कीड़े पड़ना, कीड़े रेंगना, गिद्ध, कौआ, कुत्ता, सियार आदि द्वारा माँस नोंचना आदि।

अनुभाव—नाक-भौं सिकोड़ना, थूकना, रोमांच आदि।

संचारी भाव—मोह, अपस्मार, जड़ता, व्याधि, मरण आदि।

उदाहरण— "सिर पर बैठ्यो काग, आँख दोऊ खात निकारत।
खींचत जीभहि स्यार, अतिहि आनन्द उर धारत॥"

(8) अद्‌भुत रस—विचित्र या आश्चर्यजनक वस्तुओं को देखकर हृदय में विस्मय आदि के जो भाव उठते हैं, उनसे 'अद्‌भुत रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—विस्मय या आश्चर्य।

आलंबन विभाव—अलौकिक तथा आश्चर्यजनक वस्तु आदि।

उद्दीपन विभाव—इन वस्तुओं का दीखना अथवा वर्णन सुनना आदि।

अनुभाव—मुँह खुला रह जाना, दाँतों तले उँगली दबाना, रोमांच, स्वर भंग, पसीना आना, स्तम्भित रह जाना।

संचारी भाव—हर्ष, भ्रान्ति, आवेग, वितर्क, चिन्ता, जड़ता, चंचलता आदि।

उदाहरण— "लीन्हों उखारि पहार विसाल, चल्यो तेहि काल विलंब न लायो।
मारुत नन्दन मारुत को मन को, खगराज को बेगि लजायो।।"

(9) शान्त रस—संसार की निस्सारता, तत्त्व ज्ञान, सांसारिक पदार्थों की असारता, परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होने से शांत रस की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—निर्वेद।

आलम्बन विभाव—संसार की असारता का ज्ञान या ईश्वर-चिंतन।

उद्दीपन विभाव—सत्संगति, धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों का पठन आदि।

अनुभाव—संसार को दुःखी देखकर कातर होना, अश्रुपात आदि।

संचारी भाव—मति, धृति, हर्ष, स्मृति, ग्लानि, उद्वेग, दैन्य, जड़ता एवं निर्वेद आदि।

उदाहरण— "जप माला छापा तिलक, सरै न एकौ काम।
मन काचे नाचे वृथा, साँचे रांचे राम।।"

(10) वात्सल्य रस—वस्तुतः यह रस शृंगार रस के अन्तर्गत आता है। संतान के प्रति स्नेह या वात्सल्य से 'वात्सल्य रस' की उत्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—वत्सलता तथा स्नेह।

आलम्बन विभाव—शिशु।

उद्दीपन विभाव—आलम्बन का तुतलाना, घुटनों चलना, खेलना, अन्य बाल चेष्टाएँ आदि।

अनुभाव—आलिंगन, चुम्बन, एकटक देखना।

संचारी भाव— मोह, आवेग, हर्ष आदि।

'माँओ' कहकर बुला रही थी, मिट्टी खाकर आई थी।
कुछ मुँह में कुछ लिए हाथ में, मुझे खिलाने आई थी।
मैंने पूछा यह क्या लाई, बोल उठी वह 'माँ काओ'।
हुआ प्रफुल्लित हृदय खुशी से मैंने कहा 'तुम्हीं खाओ।"

(11) भक्ति रस—ईश्वर विषयक रति भाव जब भक्त में उत्पन्न होता है तो 'भक्ति रस' की निष्पत्ति होती है।

स्थायी भाव—ईश्वर विषयक रति।

आलम्बन विभाव—ईश्वर या देवता।

उद्दीपन विभाव—ईश्वर के गुण, कृपालुता, भक्त वत्सलता, सत्संग आदि।

अनुभाव—ईश्वर का गुण-कथन, गदगद होना आदि।

संचारी भाव—हर्ष, स्मृति, पुलक, गर्व आदि।

उदाहरण— "अंसुवन जल सींचि-सींचि, प्रेम बेलि बोई।
'मीरा' की लगन लागी, होनी ही सो होई।।"

❑❑

खण्ड-'ग' पाठ्य पुस्तक व पूरक पाठ्य पुस्तक

'क्षितिज' भाग-2 (गद्य-खण्ड)

अध्याय - 1 नेताजी का चश्मा *— स्वयं प्रकाश*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—समकालीन कहानी में महत्वपूर्ण स्थान रखने वाले कहानीकार स्वयं प्रकाश का जन्म सन् 1947 में इंदौर (मध्यप्रदेश) में हुआ। उनका बचपन राजस्थान में बीता। इन्होंने मैकेनिकल इंजीनियरिंग की पढ़ाई की, उसके बाद औद्योगिक प्रतिष्ठान में इन्हें नौकरी मिल गई, लेकिन बाद में इन्होंने नौकरी छोड़ दी व पत्रिका (वसुधा) का संपादन करने लगे। वर्तमान में वे भोपाल (मध्यप्रदेश) में रह रहे हैं।

प्रमुख रचनाएँ—बीच में विनय, आदमी जात का आदमी, आएँगे अच्छे दिन भी, संधान, ईंधन आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा-शैली—उनकी भाषा आम बोलचाल की खड़ी बोली है जिमें तत्सम, तद्भव, देशज शब्दों के साथ-साथ आगत शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।

पाठ का सारांश

स्वयं प्रकाश जी ने अपनी कहानी 'नेताजी का चश्मा' के माध्यम से देश के करोड़ों गुमनाम नागरिकों के योगदान को उजागर किया है। इस देश के निर्माण में अपने-अपने तरीके से बड़े के साथ-साथ छोटा देशभक्त योगदान देता है। उन छोटे देशभक्तों में बच्चे भी शामिल हैं।

प्रस्तुत कहानी एक छोटे से कस्बे की कहानी है। इसी कस्बे की नगरपालिका के किसी उत्साही प्रशासनिक अधिकारी ने कस्बे के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। इस कहानी का कथानक इसी प्रतिमा के इर्द-गिर्द घूमता है।

इस प्रतिमा को बनाने का कार्य तमाम राजनीतिक एवं प्रशासनिक ऊहापोह के पश्चात् कस्बे के हाईस्कूल के ड्राइंग मास्टर मोतीलाल जी को सौंपा गया, जिन्होंने एक महीने में मूर्ति बनवाने का विश्वास दिलाया और जब मूर्ति बनकर तैयार हुई तो लगने लगा कि यह मूर्तिकार का सफल प्रयास था। नेताजी की मूर्ति दो फुट की थी और सुन्दर थी। नेताजी सुन्दर लग रहे थे कुछ-कुछ मासूम और कमसिन। मूर्ति को देखते ही

'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' वगैरह याद आने लगते थे। उस मूर्ति में बस एक चीज खटकती थी वह थी नेताजी की आँखों का चश्मा। मूर्ति की आँखों पर संगमरमर का चश्मा नहीं था।

हालदार साहब कम्पनी के काम से इसी कस्बे से गुजरते थे। जब वे पहली बार इस कस्बे से गुजरे और पान खाने के लिए रुके तभी उन्होंने देखा कि मूर्ति पत्थर की थी, लेकिन उस पर चश्मा रियल था। हालदार साहब को कस्बे के नागरिकों की देशभक्ति की भावना का यह प्रयास अच्छा लगा, वरना देशभक्ति तो आजकल मज़ाक की चीज़ होती जा रही है। हालदार साहब जब भी कस्बे से गुजरते, चौराहे पर रुकते, पान खाते और मूर्ति को ध्यान से देखते उन्हें हर बार मूर्ति का चश्मा बदला हुआ मिलता, कभी गोल फ्रेम वाला, कभी मोटे फ्रेम वाला, कभी चौकोर चश्मा आदि। जब हालदार साहब से न रहा गया तो उन्होंने पानवाले से चश्मे के बदलने का कारण पूछ ही लिया, पानवाले ने अपनी बत्तीसी दिखाकर कहा कि कैप्टन चश्मेवाला, चश्मा चेंज कर देता है।

हालदार साहब को समझ में आ गया कि एक कैप्टन नाम का चश्मेवाला है जिसे बगैर चश्मे के नेताजी की मूर्ति अच्छी नहीं लगती इसलिए वह अपने बाँस पर टँगे हुए गिने-चुने चश्मों में से कोई एक नेताजी की मूर्ति पर लगा देता है, लेकिन जब कोई ग्राहक आता है और उससे वैसे ही फ्रेम की माँग करता है तो वह मूर्ति पर लगा फ्रेम ग्राहक को दे देता है और नेताजी से माफी माँगते हुए उन्हें दूसरा फ्रेम पहना देता है।

हालदार साहब को यह सब बड़ा विचित्र लग रहा था। एक दिन उन्होंने पानवाले से जाकर पूछा, क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिंद फौज़ का भूतपूर्व सिपाही। पानवाले ने व्यंग्य से मुस्कराकर कहा-वो लँगड़ा क्या जायेगा फौज में, पागल है पागल। वो देखो आ रहा है। हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मजाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। उन्होंने देखा एक बूढ़ा मरियल-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गाँधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में छोटी सी संदूकची और दूसरे हाथ में बाँस पर टँगे बहुत से चश्मे लिए एक गली से निकल रहा था और एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। यही था कैप्टन चश्मेवाला जो फेरी लगाता था।

हालदार साहब दो साल तक अपने काम के सिलसिले में उसी कस्बे से गुजरते रहे और नेताजी की मूर्ति में बदलते हुए चश्मे को देखते रहे। एक बार हालदार साहब ने देखा कि मूर्ति के चेहरे पर कैसा भी चश्मा नहीं था, पानवाले से पूछने पर पता चला कि कैप्टन मर गया है। हालदार साहब उदास हो गए और सोचने लगे कि उस पीढ़ी का क्या होगा जो अपने देश के लिए सर्वस्व लुटाने वालों पर हँसती है और अपने लिए बिकने का मौका ढूँढ़ती है।

पन्द्रह दिन पश्चात् हालदार साहब पुनः उसी कस्बे से गुजरे सोचा कि प्रतिमा के पास नहीं रुकेंगे और पान भी आगे ही खा लेंगे पर आदत से मजबूर आँखें चौराहा आते ही मूर्ति की तरफ उठ गईं। गाड़ी से उतर कर तेज-तेज कदमों से मूर्ति की तरफ आगे बढ़े और उसके सामने जाकर अटेंशन में खड़े हो गए, उन्होंने देखा मूर्ति पर सरकंडे से बना चश्मा लगा हुआ था, जिसे शायद बच्चों ने बनाकर मूर्ति को पहना दिया था। इतनी-सी बात पर उनकी आँखें भर आईं।

शब्दार्थ

सिलसिला—क्रम; **प्रतिमा**—मूर्ति; **लागत**—खर्चा; **उपलब्ध बजट**—खर्च करने के लिए प्राप्त धन; **ऊहापोह**—क्या करें क्या न करें इसका निर्णय न कर पाना; **स्थानीय**—उसी क्षेत्र में रहने वाला; **कसर**—कमी; **खटकना**—अखरना; **पटक देना**—जल्दी-जल्दी बनाकर देना; **बस्ट**—मुख एवं छाती के ऊपरी भाग की बनाई गई आकृति; **कमसिन**—सुंदर; **कौतुकभरी**—विस्मय या आश्चर्ययुक्त; **रियल**—वास्तविक; **निष्कर्ष**—सार; **दरकार**—आवश्यकता; **आइडिया**—विचार; **सराहनीय**—प्रशंसनीय; **लक्षित किया**—देखा; **दुर्दमनीय**—जिसका दमन करना कठिन हो; **प्रफुलता**—प्रसन्नता; **गुजरना**—जाना; **ठूँसा**—भरा हुआ; **गिराक**—खरीदार; **प्रफुल्लता**—खुशी; **कौम**—जाति; **होम कर देना**—कुर्बान हो जाना; **ओरिजनल**—असली, वास्तविक; **द्रवित**—पिघला हुआ; **पारदर्शी**—जिसके आर-पार देखा जा सके; **अवाक् रह जाना**—आश्चर्यचकित रह जाना; **मरियल**—अत्यंत कमजोर शरीर वाला; **हृदयस्थली**—वक्षःस्थल; **अटेंशन**—सावधान; **भावुक**—भावनाओं के वशीभूत होने वाला।

❑❑

अध्याय - 2 बाल गोबिन भगत — *रामवृक्ष बेनीपुरी*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय- रामवृक्ष बेनीपुरी का जन्म बिहार के मुजफ्फरनगर जिले के बेनीपुर गाँव में सन् 1899 में हुआ। बचपन में ही माता-पिता का साया इनके ऊपर से उठ गया। अतः आरम्भिक जीवन बहुत संघर्षों से भरा रहा। मैट्रिक तक की पढ़ाई कर वे स्वाधीनता आंदोलन में भाग लेने लगे। सन् 1968 में उनका देहान्त हो गया।

प्रमुख रचनाएं- 'पतितों के देश में', 'चिता के फूल', 'माटी की मूरतें', 'जंजीरें और दीवारें', अंबपाली आदि उनकी प्रमुख रचनाएं हैं। उनका पूरा साहित्य बेनीपुरी रचनावली के आठ खंडों में प्रकाशित है।

भाषा-शैली- बेनीपुरी जी की भाषा में तत्सम, तद्भव, उर्दू भाषाओं के साथ सामान्य बोलचाल के आंचलिक शब्दों का प्रयोग भी यथास्थान देखने को मिलता है। इसकी भाषा सरल व सहज है।

पाठ का सारांश

'बालगोबिन भगत' जाति के तेली थे। हमारे समाज में ऐसी व्यवस्था है कि उसे वर्ण व्यवस्था में सबसे निचले स्तर का माना जाता है—जिसका मुँह देखने के बाद यात्रा सफल नहीं होती, पर बालगोबिन भगत के सशक्त व्यक्तिगत चरित्र जो संन्यासी के गुणों से युक्त थे, उनके सम्मुख लेखक को बार-बार झुकने के लिए मजबूर किया, जबकि लेखक ने अपने ब्राह्मणत्व के जोश में ऐसे कई ब्राह्मणेतर लोगों का अभिवादन करना छोड़ दिया था। उन पर ब्राह्मणत्त्व सोलहों कलाओं से सवार था, पर न जाने कौन-सी प्रेरणा थी, जो कि उन्हें बालगोबिन भगत के आगे झुककर राम-राम किए बिना नहीं रहने देती थी।

'बालगोबिन भगत' का बाहरी व्यक्तित्व एक सामान्य कबीर पंथियों जैसा था। उनका चेहरा सफेद बालों से जगमग बना रहता। कपड़े कम पहनते थे। कमर में एक लँगोटी-मात्र और सिर पर कबीर पंथियों जैसी एक टोपी तथा ठंड के दिनों में काली कमली ऊपर से ओढ़े रहते तथा मस्तक पर चंदन और गले में तुलसी की माला बाँधे रहते।

'बालगोबिन भगत' गृहस्थ होकर भी साधु की सब परिभाषाओं में खरे उतरने वाले थे। वे कबीर को 'साहब' मानते थे, उन्हीं के गीतों को गाते तथा कबीर द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते। लेखक को 'बालगोबिन भगत' के मधुर संगीत ने भी बहुत प्रभावित किया। कबीर के सीधे-सादे पद उनके कंठ से निकलकर सजीव हो जाते थे।

आषाढ़ की रिमझिम पड़ते ही समूचा गाँव खेत में उतर पड़ता, 'बालगोबिन भगत' भी अपने खेत में रोपनी करने के लिए उतर पड़ते और उनका कण्ठ एक-एक शब्द को संगीत के झीने पर चढ़ाकर कुछ को स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को पृथ्वी पर खड़े लोगों के कानों की ओर! भादों की अँधेरी रात में भी दादुरों की टर्र-टर्र या झिल्ली की झंकार 'बालगोबिन भगत' के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकती। कार्तिक मास के आते ही बालगोबिन भगत की प्रभातियाँ शुरू हो जातीं और फागुन तक चलतीं। गर्मियों में उनकी 'संझा' उमस भरी शाम को शीतल करती। घर के आँगन में आसन जमाकर बैठ जाते तो गाँव के कुछ प्रेमी भी जुट जाते। एक पद 'बालगोबिन भगत' कहते जाते, उनकी प्रेमी मंडली उसे दुहराती, तिहराती। धीरे-धीरे मन-तन पर हावी हो जाता है और एक क्षण ऐसा आता कि 'बालगोबिन भगत' खँजड़ी लिए बीच में नाच रहे होते और उसके साथ ही सबके तन और मन नृत्यशील हो उठते।

'बालगोबिन भगत' की संगीत साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा! वह उनका इकलौता बेटा था। 'बालगोबिन भगत' उस पर ज्यादा नजर रखते थे, क्योंकि वह सुस्त और कमजोर था। उनका मानना था कि ऐसे लोग निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हक़दार होते हैं। उन्होंने अपने पुत्र का बड़ी सादगी के साथ विवाह किया था। पतोहू बड़ी ही सुशील मिली थी। उसने पूरे घर को सँभाल लिया था। 'बालगोबिन भगत' के बेटे की मृत्यु का समाचार जब लेखक को मिला तो कौतूहलवश उनके घर गया और यह देखकर दंग रह गया कि बेटे का शव सफेद कपड़े से ढका हुआ आँगन में रखा हुआ था। वो जमीन पर आसन लगाए गीत गाए जा रहे थे वही पुराना स्वर। पतोहू रो रही है, जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं। वे पतोहू से रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते—विरहिणी आत्मा अपने प्रेमी परमात्मा से जा मिली। इस कथन में उनका चरम विश्वास बोल रहा था।

'बालगोबिन भगत' ने पुत्र के शव को पतोहू से ही आग दिलाई। श्राद्ध की अवधि पूरी होते ही पतोहू को उसके भाई के साथ भेज दिया और कहा कि इसका दूसरा विवाह कर देना—पतोहू जाना नहीं चाहती थी—वह कहती कि बुढ़ापे में उनकी देखभाल कौन करेगा, पर उनके अटल निर्णय के आगे उसकी एक न चली।

बालगोबिन भगत की अंतिम विदाई भी उन्हीं के अनुरूप हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान के लिए जाते, करीब तीस कोस पर गंगा थी। जाने-आने में तीन-चार दिन लगते थे। इन दिनों वे उपवास रखते। इतने लम्बे उपवास में भी वही मस्ती, अब बुढ़ापे में भी वही जवानी वाली टेक।

किन्तु इस बार लौटे तो तबियत कुछ खराब थी। खाने-पीने के बाद तबियत नहीं सुधरी। उन्होंने अपना नियम-व्रत नहीं छोड़ा—दोनों वक्त गाना, स्नान-ध्यान, खेतीबाड़ी की देखभाल; वे दिन-दिन क्षीण होते गए। आराम करने को कहते तो हँसकर टाल देते। उस दिन भी संध्या में गीत गाया पर ऐसा लगा जैसे तार टूट गया हो और माला का एक-एक मोती बिखर गया हो। भोर में लोगों ने गीत की मधुर आवाज नहीं सुनी जाकर देखा तो बालगोबिन भगत नहीं रहे, सिर्फ उनका शरीर पड़ा है।

शब्दार्थ

पुरवाई—पूर्व दिशा की ओर से चलने वाली हवा; **लिथड़े**—मिट्टी से सने हुए; **हलवाहा**—हल हाँकने वाला किसान; **अधरतिया**— आधी रात; मूसलाधार वर्षा- जोर की वर्षा; **दादुर**—मेढक; **कोलाहल**—शोर; **खंजड़ी**—ढपली के ढंग का परंतु आकार में उससे छोटा वाद्ययंत्र; **निस्तब्धता**—शांत, सन्नाटा; **प्रभाती**—प्रात:काल में गाए जाने वाले गीत; **मँझोला**—न बहुत बड़ा न बहुत छोटा, बीच का; **गोरे-चिट्टे**—गौर वर्ण के; **जटाजूट**—लंबे बालों का झुंड; **कबीरपंथी**—कबीर के पंथ को मानने वाले, कबीर-पंथ में विश्वास रखने वाले; **कमली**—कंबल; **रामानंदी**—रामानंद के द्वारा अपनाया गया; **गृहिणी**—पत्नी; **पतोहू**—पुत्र-वधु; **खरा उतरना**—शुद्ध होना; **खरा व्यवहार रखना**—स्पष्ट व्यवहार रखना; **दो टूक कहना**—स्पष्ट कहना; **संकोच करना**—झिझकना; **खामखाह**—बेकार में; **कुतूहल**—जानने की इच्छा रखना; **साहब**—ईश्वर; **दरबार**—देवालय; **मुग्ध**—खुश होना; **रोपनी**—धान की रोपाई करना; **पोखर**—छोटा तालाब; **भिंडे**—टीला, मिट्टी से बना ऊँचा स्थान, चबूतरा जैसा; **टेरना**—ऊँची आवाज में गाना; **दाँत किटकिटाने वाली ठंड**—जोर की ठंड, जिसमें दाँत भी बज उठें; **भोर**—सूर्य निकलने से पहले का समय; **लालिमा**—लाल रंग लिए प्रकाश; **कुहासा**—कोहरा; **आवृत**—ढका हुआ; **श्रमबिंदु**—पसीने की बूँदें; **करतल**—तालियाँ; **हावी होना**—प्रभावी होना; **चरम-उत्कर्ष**—सबसे ऊपर; **बोदा**—कम समझ वाला; **साध**—कामना; **सुभग**—भद्र, सौभाग्यशालिनी; **प्रबंधिका**—प्रबंध करने वाली स्त्री।

❑❑

अध्याय - 3 लखनवी अंदाज़ — *यशपाल*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय- हिन्दी के प्रसिद्ध उपन्यासकारों, कहानीकारों एवं निबन्धकारों में यशपाल जी का नाम उल्लेखनीय है। यशपाल जी का जन्म पंजाब के फिरोजपुर छावनी में सन् 1903 में हुआ। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा कांगड़ा में हुई। लाहौर में आगे की पढ़ाई करते समय ये क्रांतिकारी गतिविधियों से जुड़ गये तथा कई बार जेल भी गये। सन् 1976 में उनकी मृत्यु हो गयी।

प्रमुख रचनाएँ—दिव्या, झूठा-सच, ज्ञानदान, अमिता, पिंजरे की उड़ान आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

भाषा-शैली—उनकी रचनाओं में भाषा की स्वाभाविकता व सजीवता दिखाई देती है। उन्होंने वर्णनात्मक एवं चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया।

पाठ का सारांश

'लखनवी अंदाज़' नामक पाठ में लेखक ने एक ऐसे नवाब साहब का वर्णन किया है जो ट्रेन के सेकंड क्लास में यात्रा करते हुए अपनी रईसी का प्रदर्शन करने के लिए खीरे में नमक-मिर्च मिलाकर उसे खाते नहीं बल्कि सूँघते हैं और सूँघकर उसे ट्रेन से बाहर फेंक देते हैं। इस कहानी से यशपाल उस सामंती वर्ग पर कटाक्ष करते हैं, जो वास्तविकता से बेखबर एक बनावटी जीवन-शैली का आदी है। इस तरह के लोग जीवन के यथार्थ से दूर कल्पना की दुनिया में जीते हैं, जो अपनी रईसी का झूठा दिखावा करने में शान समझते हैं।

लेखक ने भीड़ से बचकर एकांत में नई कहानी के संबंध में सोचने और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखने का आनंद लेने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया। गाड़ी छूट रही थी अत: वह दौड़कर एक डिब्बे में चढ़ गया। उसने देखा कि वहाँ एक बर्थ पर एक लखनवी नवाब पालथी मारकर बैठे हुए थे। उनके सामने तौलिए पर दो ताजे-चिकने खीरे रखे हुए थे। लेखक को देखकर उनकी आँखों में एकांत में बाधा उत्पन्न होने का असंतोष उभर आया। लेखक ने सोचा, हो सकता है उन्हें खीरे जैसी साधारण चीज का शौक देख लिए जाने के कारण संकोच हो रहा हो।

नवाब साहब ने लेखक के प्रति कोई उत्सुकता नहीं दिखाई इसलिए लेखक ने भी आत्म-सम्मान में उनकी ओर से दृष्टि हटा ली। लेखक यह सोचने लगा सम्भवत: नवाब साहब ने भीड़ से बचने के लिए सेकंड क्लास का टिकट लिया हो और अब शहर के ही किसी भद्र व्यक्ति द्वारा देख लिया जाना उन्हें गवारा न हो पर थोड़ी देर बाद ही नवाब साहब ने लेखक का अभिवादन करते हुए उससे खीरा खाने के लिए पूछा। लेखक को अचानक उनका भाव परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। उसने सोचा कि वे शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए ऐसा कर रहे हैं। अत: लेखक ने खीरा खाने से इनकार कर दिया।

नवाब साहब ने तौलिए को झाड़कर सामने बिछा लिया और दोनों खीरों को धो पोंछकर उस पर रख लिया। उन्होंने खीरे के सिरों को काटकर झाग निकाला और फिर सावधानीपूर्वक खीरों को छीलकर फाँकों को सलीके से तौलिए पर सजा दिया और फिर उन पर जीरा मिश्रित नमक और लाल मिर्च का चूर्ण छिड़क दिया। उनके हाव-भाव और जबड़ों के फड़कने से ऐसा लगा कि उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से भर गया है। नवाब साहब ने खीरे की ओर संतुष्ट आँखों से देखा और उसकी एक फाँक को उठाकर सूँघा और स्वाद के आनंद में पलकें मूँद लीं। उन्होंने अपने मुँह में भर आए पानी को गले से नीचे उतार लिया। इसके बाद उन्होंने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर फेंक दिया। इसी तरह वे सारी फाँकों को नाक के पास ले जाकर काल्पनिक रसास्वादन कर खिड़की से बाहर फेंकते गए।

सारी फाँकों को बाहर फेंककर नवाब साहब ने तौलिये से हाथ और होंठ पोंछे और गर्व से गुलाबी आँखों से लेखक की ओर देख लिया, मानो यह कह रहा हो कि यह है ख़ानदानी रईसों का तरीका। नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक सोचने लगा कि यह है ख़ानदानी तहज़ीब, नफ़ासत और नज़ाकत।

लेखक सोचने लगा कि नवाब साहब के इस तरीके को सुगंध और स्वाद की कल्पना से संतुष्ट होने का सूक्ष्म, बढ़िया और अमूर्त तरीका तो माना जा सकता है, परन्तु इससे उदर की तृप्ति नहीं हो सकती। नवाब साहब ने डकार लेकर बताया कि खीरा स्वादिष्ट तो होता है पर आसानी से पचता नहीं। नवाब साहब की बात सुनते ही लेखक के ज्ञान-चक्षु खुल गए। उसने सोचा जब खीरे की सुगंध और स्वाद की कल्पना से पेट भर जाता है और डकार आ सकती है, तो बिना विचार, घटना और पात्रों के लेखक की इच्छा मात्र से नई कहानी क्यों नहीं बन सकती?

शब्दार्थ

मुफ़स्सिल—केन्द्रीय स्थान और उसके आसपास, स्थानीय; **उतावली**—बैचेनी; **प्रतिकूल**—विपरीत; **निर्जन**—एकांत, खाली स्थान; **एकांत-चिंतन**—अकेले में सोचना; **विघ्न**—बाधा; **अपदार्थ-वस्तु**—सामान्य-चीज; **आत्मसम्मान**—स्वाभिमान; **आँखें चुराना**—बचने का प्रयास; **ठाली बैठना**—कुछ काम न करना; **किफ़ायत**—मितव्ययता, कम खर्च करना; **गवारा न होना**—स्वीकार न होना; **कनखियाँ**—तिरछी नजर से देखना; **गौर करना**—ध्यान देना; **आदाब अर्ज़**—अभिवादन करना; **भाव-परिवर्तन**—भाव (विचारों) में परिवर्तन; **भाँप लेना**—समझ जाना; **शराफ़त**—सज्जनता, शालीनता; **गुमान**—घमंड; **लथेड़ लेना**—जबरदस्ती सम्मिलित करना; **किबला**—आप (सम्मानसूचक शब्द); **दृढ़ निश्चय**—मजबूत विचार; **एहतियात**—सावधानी; **करीने से**—अच्छी तरह से सजाना; **बुरकना**—छिड़कना; **भाव-भंगिमा**—चेहरे के

बदलते स्वरूप; **स्फुरण**—फड़कना, हिलना; **प्लावित होना**—पानी भर जाना; **असलियत**—वास्तविकता, सचमुच; **वल्लाह**—कसम से; **पनियाती**—पानी छोड़ती; **मुँह में पानी आना**—जी ललचाना; **तलब महसूस होना**—इच्छा करना; **सतृष्ण**—इच्छा सहित; **दीर्घ-निश्वास**—लंबी श्वास; **पलकें मूँदना**—आँखें बंद कर लेना।

❑❑

अध्याय - 4 मानवीय करुणा की दिव्य चमक — *सर्वेश्वर दयाल सक्सेना*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—बहुमुखी प्रतिभा के धनी व हिन्दी की नई कविता के प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वेश्वर दयाल सक्सेना का जन्म सन् 1927 में बस्ती (उ.प्र.) में हुआ। वहीं से इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई के लिये ये वाराणसी चले गये। बाद में एम.ए. इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पास कर ऑडीटर जनरल के दफ्तर में नौकरी की। इन्होंने बाल पत्रिका 'पराग' का सम्पादन भी किया। सन् 1984 में इनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—बकरी, लाख की नाक, इब्नेबतूता का जूता, सोया हुआ जल, लड़ाई आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। लेखक होने के साथ ही इन्होंने, काठ की घंटियाँ, खूँटियों पर टँगे लोग, कुआनो नदी जैसे काव्य-संग्रहों की भी रचना की।

भाषा-शैली—सक्सेना जी की भाषा में लोकभाषा के शब्दों की प्रचुरता मिलती है। मुहावरों का प्रयोग इसकी भाषा को उत्कृष्टता प्रदान करता है। इसके साथ ही विदेशी शब्दों का भी उन्होंने अपनी रचनाओं में प्रयोग किया।

पाठ का सारांश

फ़ादर का स्नेहमय व्यक्तित्व—लेखक को दु:ख है कि फ़ादर बुल्के की मृत्यु गैंग्रीन से हुई। वे जीवन-भर लोगों को स्नेह की मिठास बाँटते रहे। फिर भी उन्हें गैंग्रीन हुआ। हम किस ईश्वर से पूछें कि बुढ़ापे में उन्हें ऐसा दु:ख क्यों मिला? वे सदा साधुओं जैसा सफेद लम्बा चोगा पहने रहते थे। उनकी बाँहें और आँखें सदा गले लगाने को आतुर लगती थीं। लेखक ने पैंतीस सालों तक उनके इस स्नेह को महसूस किया था। उन्हें याद करना करुण संगीत-सा लगता है और देखना करुणा में स्नान करने जैसा।

'परिमल' के सदस्य के रूप में—फ़ादर से बात करने पर मन में कर्म करने का संकल्प जागता था। जिन दिनों लेखक इलाहाबाद में था, फ़ादर भी 'परिमल' नामक साहित्यिक संस्था के सदस्य थे। वे उस पारिवारिक स्नेह में बड़े सदस्य के समान थे। वे गोष्ठियों में, विचार-विमर्श में और हँसी-मजाक में खुलकर भाग लेते थे। वे सबके पारिवारिक उत्सवों और संस्कारों में पुरोहित की भाँति उपस्थित रहते थे। लेखक के पुत्र के मुख में पहली बार अन्न उन्हीं ने डाला था। उनका वात्सल्य देवदारु-सा ऊँचा था।

फ़ादर का पारिवारिक जीवन—फ़ादर प्राय: इलाहाबाद की सड़कों पर साइकिल चलाते हुए दिख जाते थे। वे हमेशा प्यार और ममता से छलकते रहते थे। मूलत: वे बेल्ज़ियम के वासी थे। घर में माँ, पिता, दो भाई और एक बहन थी। वे भारत को ही अपना देश मानने लगे थे। यूँ वे अपनी जन्मभूमि रेम्सचैपल को बहुत सुन्दर मानते थे। उन्हें अपनी माँ से भी गहरा लगाव था। अकसर उनकी माँ के पत्र उनके पास आया करते थे। डॉ. रघुवंश को वे माँ की चिट्ठियाँ दिखाते थे। उनके मन में पिता और भाइयों के प्रति विशेष लगाव नहीं था। भारत में बसने के बाद वे दो-तीन बार ही बेल्ज़ियम गए थे।

संन्यासी बनने के प्रश्न पर वे इतना ही कहते थे कि वे प्रभु की इच्छा से संन्यासी बने। वे इंजीनियरिंग के अन्तिम वर्ष की पढ़ाई कर रहे थे कि धर्मगुरु के पास संन्यासी बनने के लिए पहुँचे। उन्होंने उनसे भारत में जाने की इच्छा रखी। भारत ही क्यों? इस पर वे कुछ नहीं कहते। उन्हें संन्यासी बनाकर भारत भेज दिया गया।

फ़ादर बुल्के भारत में—फ़ादर बुल्के ने पहले दो साल 'जिसेट संघ' में पादरियों के धर्माचार की पढ़ाई की। फिर 9-10 वर्ष दार्जिलिंग में पढ़ते रहे। उन्होंने कोलकाता से बी.ए. तथा इलाहाबाद से एम.ए. हिन्दी किया। उन्होंने इलाहाबाद के विद्वान् डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' विषय पर शोध-प्रबन्ध प्रस्तुत किया। उन्होंने 'ब्लू बर्ड' नामक नाटक का रूपांतर 'नील पंछी' के नाम से किया। इसके बाद वे राँची के सेंट जेवियर्स कॉलेज में हिन्दी और संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हो गए। यहीं उन्होंने प्रसिद्ध अंग्रेजी-हिन्दी कोश तैयार किया और बाइबिल का अनुवाद भी किया। 73 वर्ष की आयु में उनका देहान्त हो गया।

अपनत्व-भरा व्यक्तित्व—फ़ादर बुल्के संन्यासी ज़रूर थे, लेकिन रिश्ते बनाकर तोड़ते नहीं थे। दसियों साल बाद मिलने पर भी उनकी गंध महसूस होती थी। वे दिल्ली आने पर लेखक से अवश्य मिलते थे। वे हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए बहुत व्यग्र रहते थे। इसके लिए वे मंचों पर अकाट्य तर्क देते थे। वे हिन्दी वालों को ही हिन्दी की उपेक्षा करते देखकर झुँझलाते थे।

फ़ादर बुल्के हर दु:ख में साथ खड़े होते थे। उनके मुख से निकले सांत्वना के शब्द मन में गहरी शान्ति प्रदान करते थे। लेखक को अपनी पत्नी और पुत्र की मृत्यु याद है।

फ़ादर की मृत्यु और अंतिम संस्कार—लेखक ने फ़ादर को अन्तिम बार देखा तो वे ताबूत में थे। उनके चेहरे पर बिखरी शान्ति स्थिर हो गई थी। 18 अगस्त, 1982 को सुबह दस बजे उनके शव को दिल्ली के कश्मीरी गेट स्थित निकलसन कब्रगाह में उतारा गया। कुछ पादरी,

डॉ. रघुवंश का बेटा और उनके परिजन उन्हें धरती की गोद में सुलाने के लिए ले चले। जैनेंद्र, विजयेंद्र स्नातक, अजित कुमार, निर्मला जैन, मसीही समुदाय के लोग, डॉ. सत्यप्रकाश, डॉ. रघुवंश भी मौन उदासी में घिरे खड़े थे। मसीही विधि से अन्तिम संस्कार शुरू हुआ। राँची के फ़ादर पास्कल तोयना ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा—"फ़ादर बुल्के धरती में जा रहे हैं। इस धरती से ऐसे रत्न और पैदा हों।" डॉ. सत्यप्रकाश ने भी उन्हें नमन किया और देह कब्र में उतार दी गई । वहाँ उपस्थित सब लोग रो पड़े। फ़ादर बुल्के फल-फूल-भरे छायादार पेड़ की भाँति थे। उनका व्यक्तित्व दिव्य करुणा की चमक से लहलहाता था। आज भी उनकी याद यज्ञ की पवित्र आग की तरह महसूस होती है।

शब्दार्थ

जहरबाद—गैंग्रीन, एक तरह का जहरीला और कष्टसाध्य फोड़ा; **आस्था**—विश्वास, श्रद्धा; **देहरी**—दहलीज; **पादरी**—ईसाई धर्म का पुरोहित या आचार्य; **आतुर**—अधीर; **निर्लिप्त**—आसक्ति रहित; **आवेश**—जोश; **लबालब**—भरा हुआ; **धर्माचार**—धर्म का पालन या आचरण; **रूपांतर**—किसी वस्तु का बदला हुआ रूप; **अकाट्य**—जो कट न सके; **विरल**—कम मिलने वाली; **ताबूत**—शव या मुरदा ले जाने वाला संदूक या बक्सा; **करील**—झाड़ी के रूप में उगने वाला एक कँटीला और बिना पत्ते का पौधा; **गैरिक वसन**—साधुओं द्वारा धारण किये जाने गेरुए वस्त्र; **श्रद्धानत**—प्रेम और भक्ति युक्त पूज्यभाव; **कोश**—खजाना या शब्दकोश; **लगाव**—अधिक प्रेम; **दिव्य**—आलौकिक; **अस्तित्व**—विद्यमान होना; **यातना**—पीड़ा; **साक्षी**—गवाह; **छलकता**—उमड़ता।

❑❑

अध्याय - 5 एक कहानी यह भी — *मन्नू भंडारी*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—हिन्दी साहित्य की सुप्रसिद्ध कहानी लेखिका मन्नू भंडारी का जन्म 2 अप्रैल, 1931 को भानपुरा, जिला मंदसौर मध्य प्रदेश में हुआ था। इन्होंने अपनी इण्टरमीडिएट तक की शिक्षा अजमेर में प्राप्त की और बनारस विश्वविद्यालय से स्नातक की परीक्षा उत्तीर्ण की। कुछ समय तक इन्होंने कोलकाता में अध्यापन कार्य भी किया। बाद में मन्नू जी ने दिल्ली में स्थित मिरांडा हाउस में अध्यापन करते हुए वहीं से सेवानिवृत्ति भी प्राप्त की। वर्तमान में दिल्ली में रहकर स्वतंत्र लेखन कर रही हैं।

साहित्यिक उपलब्धियाँ : अपनी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए इन्हें हिन्दी साहित्य अकादमी का 'शिखर सम्मान' प्राप्त हुआ। इसके साथ ही इन्हें नाटक अकादमी तथा उत्तर प्रदेश हिन्दी-संस्थान द्वारा भी पुरस्कृत किया गया।

प्रमुख रचनाएँ : 'एक प्लेट सैलाब', 'मैं हार गई', 'आँखों देखा झूठ', 'यही सच है' और 'त्रिशंकु' इनके कहानी संग्रह हैं। 'आपका बंटी' और 'महाभोज' आपके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। इनके अतिरिक्त इन्होंने रजनी, स्वामी, निर्मला, दर्पण आदि फिल्म व टेलीविजन धारावाहिकों के लिए पटकथाएँ भी लिखीं।

भाषा-शैली : मन्नू भंडारी की शैली सरल, सहज तथा भावाभिव्यक्ति में सक्षम है। इनकी रचनाओं के संवाद तथा वाक्य छोटे-छोटे और प्रसंगानुकूल हैं। इनकी कहानियों और उपन्यासों में भाषा और शिल्प की सादगी तथा प्रामाणिक अनुभूमि स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है। इन्होंने अपनी रचनाओं में बोलचाल की हिन्दी के साथ-साथ अंग्रेजी, देशज तथा उर्दू के शब्दों का भी मुक्तहस्त प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

'एक कहानी यह भी' मन्नू भंडारी द्वारा आत्मपरक शैली में लिखी हुई एक 'आत्मकथा' है। प्रस्तुत आत्मकथा में बड़े ही प्रभावशाली ढंग से यह दर्शाया गया है कि बालिकाओं को किन-किन पाबन्दियों का सामना करना पड़ता है।

अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले में एक दो मंजिले मकान की ऊपरी मंजिल पर लेखिका के पिता या तो कुछ पढ़ते रहते थे या डिक्टेशन देते रहते। लेखिका का कहना है कि उनकी माँ अनपढ़ थीं। वे सबकी इच्छाओं और पिताजी की आज्ञाओं का पालन करने के लिए सदैव तत्पर रहती थीं। लेखिका के पिताजी पहले इंदौर में रहते थे। समाज-सुधार के कार्यों से जुड़े रहने के कारण उनका बड़ा मान-सम्मान था। वे बहुत कोमल और संवेदनशील होने के साथ-साथ क्रोधी और अहंवादी भी थे। उन्होंने अपने अहम् के कारण ही अपने बच्चों को अपनी आर्थिक विवशताओं का भागीदार नहीं बनाया। अपनों के हाथों मिले विश्वासघात ने उन्हें बेहद शक्की बना दिया था।

लेखिका के व्यक्तित्व में पिताजी की अनेक अच्छाइयों और बुराइयों ने प्रवेश पा लिया था। बचपन में लेखिका दुबली और मरियल भी थीं। इसलिए उनके पिताजी उनकी बड़ी और गोरी बहन सुशीला की खूब प्रशंसा करते, जिससे मन्नू के भीतर गहराई में हीन-भावना की ग्रंथि ने जन्म ले लिया था। आज अपने खंडित विश्वासों की व्यथा के नीचे उन्हें पिताजी के शक्की स्वभाव की झलक दिखलाई देती है पर लेखिका की अनपढ़ माँ पिताजी के ठीक विपरीत थीं। उनमें धरती से भी ज्यादा धैर्य और सहन-शक्ति थी। वे पिताजी की हर ज्यादती को अपना प्राप्य और बच्चों की हर उचित-अनुचित फरमाइश को अपना कर्त्तव्य समझती थीं। परन्तु उनका विवशता भरा त्याग मेरा आदर्श न बन सका।

लेखिका का कहना है कि मैं पाँच भाई-बहनों में सबसे छोटी हूँ। अपने से दो साल बड़ी बहन सुशीला के साथ मैंने घर के बड़े आँगन में बचपन के सारे खेल खेले तथा गुड़ियों के ब्याह भी रचाए और भाइयों के साथ गिल्ली-डंडा भी खेला, पर हमारी सीमा घर तक ही थी बाहर नहीं। मोहल्ले के किसी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी। लेखिका की दर्जन भर कहानियों के पात्र इसी मोहल्ले के हैं। इतने वर्षों के अन्तराल ने भी उनकी भाव-भंगिमा, भाषा, किसी को भी धूमिल नहीं किया था।

सन् 1944 में सुशीला के सोलह वर्ष की होने व मैट्रिक उत्तीर्ण करने के पश्चात् उसका विवाह हो गया। दोनों बड़े भाई भी आगे की पढ़ाई के लिए बाहर चले गए। उस समय मुझे नए सिरे से अपने वजूद का एहसास हुआ। पिताजी का ध्यान मुझ पर केन्द्रित रहने लगा। वे मुझे रसोई से दूर रखना चाहते थे। वे रसोई को भटियारखाना कहते थे जहाँ प्रतिभा नष्ट हो जाती है। घर में आए दिन राजनैतिक जमावड़े होते तो पिताजी मुझे वहाँ बैठकर यह जानने के लिए कहते, कि हमारी बातें सुनों और जानो कि चारों ओर देश में क्या हो रहा है?

सन् 1945 में दसवीं पास करके मैं सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल की 'फर्स्ट ईयर' कक्षा में पहुँच गई। वहाँ हिन्दी की अध्यापिका शीला अग्रवाल ने साहित्य की दुनिया से मेरा परिचय करवाया। खुद चुन-चुन कर मुझे पढ़ने के लिए किताबें दीं, तब मैंने प्रेमचन्द, शरत चन्द्र, जैनेन्द्र, अज्ञेय, यशपाल आदि की पुस्तकें पढ़ीं। आगे चलकर मेरा साहित्य का दायरा बढ़ता चला गया।

शीला जी ने स्वतन्त्रता-आन्दोलन में मुझे सक्रिय भागीदार बनाया। मैं भी प्रभात-फेरियाँ, जुलूस, भाषणों आदि से जोश-फ़रोश के साथ जुड़ गई। घर के बाहर चलने वाले क्रिया-कलापों को पिताजी बर्दाश्त नहीं कर पा रहे थे और मेरे लिये सारे निषेध, वर्जनाएँ ध्वस्त हो चुकी थीं। कॉलेज से मेरे लिए अनुशासनहीनता की शिकायतें आने लगीं, पिताजी यह सुनकर बहुत नाराज हुए पर कॉलेज की प्रिंसीपल से मिलकर लौटने के पश्चात् बड़े खुश हुए कि मेरा कॉलेज की लड़कियों पर रौब चलता है। आजाद-हिन्द फौज के मुकदमे के सिलसिले में हड़ताल का आह्वान होने पर अजमेर का पूरा विद्यार्थी वर्ग बाजार के चौराहे पर इकट्ठा हुआ, वहाँ दिए गए भाषण के खिलाफ पिताजी के किसी दकियानूसी मित्र ने उन्हें मेरे भाषण के विरुद्ध भड़का दिया। पर शहर के प्रतिष्ठित डॉ. अंबालाल जी ने जब मेरे भाषण की बहुत प्रशंसा की तो, पिताजी के चेहरे पर गर्व छा गया।

सन् 1947 में मई के महीने में लड़कियों को भड़काने और अनुशासन बिगाड़ने के आरोप में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस दे दिया। जुलाई में, थर्ड ईयर की क्लासेज बंद करके हम दो-तीन छात्राओं का प्रवेश निषिद्ध कर दिया गया। हम सभी ने बाहर रहकर इतना हुड़दंग मचाया कि अगस्त में थर्ड ईयर खोलना पड़ा। परन्तु वह जीत की खुशी शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि 15 अगस्त, 1947 की खुशी के सामने हल्की पड़ गई।

शब्दार्थ

निहायत—पूरी तरह से; **दरियादिली**—परोपकार की उतकृष्ट भावना; **अहंवादी**—घमंड़ी; **भगनावशेष**—खंडहर; **टूटे-फूटे हिस्से/बल-बूते पर**—सामर्थ्य पर; **अर्थ**—धन (पाठ के आधार पर); **विस्फारित होना**—बढ़ाना, और अधिक फैलाना। **हाशिए पर**—ताक पर, किनारे पर; **यातना**—कष्ट; **आँखें मूँदकर**—बिना सोचे समझे, अंधविश्वास करना; **चपेट में आना**—दबाव में आना; **ग्रंथि**—गाँठ; **तुक्के से**—भाग्य से; **भन्ना जाना**—अस्तित्व कायम करना; **ज्यादती**—अत्याचार; **दायरा**—सीमा; **विच्छिन्न करना**—अलग-अलग कर देना; **आक्रांत**—भयभीत; **दमखम से**—पूरी ताकत से; **निषिद्ध**—प्रतिबंधित, जिस पर रोक हो; **वर्चस्व**—प्रभाव; **आग-बबूला होना**—बहुत अधिक क्रोधित होना; **कहर बरपना**—बहुत बड़ी मुसीबत आ पड़ना; **अवाक्**—मौन; **दकियानूसी**—पिछड़ी और छोटी मानसिकता; **आग लगाना**—भड़काना; **थू-थू करना**—अपमानित करना; **अतरंग**—आत्मीय; **संकोच**—शर्म; **चिर-प्रतीक्षित**—लंबे समय से जिसका इंतजार हो; **बिला जाना**—समाहित हो जाना, समा जाना।

❑❑

अध्याय - 6 नौबतखाने में इबादत — *यतीन्द्र मिश्र*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—युवा साहित्यकार यतींद्र मिश्र का जन्म उत्तर प्रदेश के अयोध्या जिले में सन् 1977 में हुआ था। इन्होंने लखनऊ विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय में एम. ए किया। सन् 1999 से यह साहित्य और कलाओं के संवर्धन और अनुशीलन के लिए 'विमला देवी' फांउडेशन नामक एक सांस्कृतिक न्यास का संचालन कर रहे हैं। वर्तमान समय में यह एक स्वतंत्र लेखन के साथ-साथ 'सहित' नामक अर्द्धवार्षिक पत्रिका का संपादन भी कर रहे हैं।

रचनाएँ—अध्योध्या तथा अन्य कविताएँ, यदा-कदा, ड्योढ़ी पर आलाप, गिरिजा।

संपादन—द्विविजदेव की ग्रंथावली (सहसंपादक), थाती (संपादन)

भाषा-शैली—इनकी भाषा खड़ी बोली का परिमार्जित रूप व सहज, प्रवाहमयी भावाभिव्यक्ति में सक्षम तथा प्रसंगों के अनुकूल है। इन्होंने अपनी रचनाओं में बोलचाल के उर्दू शब्दों के साथ तत्सम व देशज शब्दों का बहुलता से प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

यतीन्द्र मिश्र जी ने यहाँ प्रस्तुत व्यक्ति चित्र 'नौबतखाने में इबादत' में प्रसिद्ध शहनाई वादक बिस्मिल्ला खाँ के परिचय के साथ-साथ उनकी रुचियों, संगीत साधना एवं लगन को संवेदनशील भाषा में व्यक्त किया है।

बिस्मिल्ला खाँ का बचपन का नाम अमीरुद्दीन था। उनका जन्म डुमराँव, (बिहार) के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ था। 5-6 वर्ष की उम्र में ही अमीरुद्दीन अपने बड़े भाई शम्सुद्दीन के साथ अपनी ननिहाल काशी में आ गए। अमीरुद्दीन और शम्सुद्दीन के दोनों मामा सादिक हुसैन व अलीबख्श देश के जाने-माने शहनाई वादक रहे हैं। रोजनामचे में काशी का बालाजी का मन्दिर सबसे ऊपर आता है। हर दिन की शुरुआत वहीं ड्योढ़ी पर होती है। यह अलीबख्श के घर का खानदानी पेशा है। बालाजी के उसी पुराने मन्दिर में बिस्मिल्ला खाँ को नौबतखाने रियाज के लिए जाना पड़ता है। मन्दिर जाने का रास्ता रसूलनबाई और बतूलनबाई के यहाँ से होकर जाता है। इस रास्ते से बिस्मिल्ला खाँ को जाना अच्छा लगता है। अपने अनेक साक्षात्कारों में बिस्मिल्ला खाँ साहब ने स्वीकार किया है कि उन्हें अपने जीवन के आरम्भिक दिनों में संगीत के प्रति आसक्ति इन्हीं गायिका बहनों को सुनकर मिली। उनकी अबोध उम्र में अनुभव की स्लेट पर संगीत प्रेरणा की वर्णमाला रसूलनबाई और बतूलनबाई ने उकेरी।

शहनाई की मंगल-ध्वनि के गायक बिस्मिल्ला खाँ ने जीवनपर्यन्त सच्चे सुर की तलाश की। पाँचों वक्त की नमाज इसी सच्चे सुर की प्रार्थना में खर्च की। उन्हें यह विश्वास था कि खुदा उनकी मुराद जरूर पूरी करेगा।

बिस्मिल्ला खाँ और शहनाई के साथ जिस एक मुस्लिम पर्व का नाम जुड़ा है वह मुहर्रम है। बिस्मिल्ला खाँ के खानदान का कोई भी व्यक्ति मुहर्रम के दिनों में न तो शहनाई बजाता है और न ही संगीत के कार्यक्रम में भाग लेता है। आठवीं तारीख को खाँ साहब खड़े होकर शहनाई बजाते हैं तथा आठ किलोमीटर दूर पैदल नौहा बजाते जाते हैं।

इस दिन कोई राग नहीं बजता, इस दिन राग-रागनियों की अदायगी का निषेध है। एक बड़े कलाकार का सहज मानवीय रूप ऐसे अवसर पर आसानी से दिख जाता है।

कभी-कभी बिस्मिल्ला खाँ सुकून के क्षणों में रियाज़ को कम; अपने जवानी के जुनून को अधिक याद करते हैं। अपने अब्बाजान और उस्ताद को कम; कुलसुम हलवाइन की कचौड़ी वाली दुकान व गीतावाली और सुलोचना को अधिक याद करते हैं। कैसे सुलोचना उनकी पसंदीदा हीरोइन रही थी? बड़ी रहस्यमय मुस्कराहट के साथ गालों पर चमक आ जाती है। सुलोचना की नई फिल्म सिनेमा हाल में आते ही बिस्मिल्ला खाँ साहब अपनी कमाई लेकर फिल्म देखने चल पड़ते थे। अपनी वो कमाई जो बालाजी मन्दिर पर रोज शहनाई बजाने से उन्हें मिलती है। अपने मज़हब के प्रति अत्यधिक समर्पित उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ की श्रद्धा काशी विश्वनाथ जी के प्रति भी अपार है। वे जब भी काशी से बाहर रहते हैं तब विश्वनाथ व बालाजी मन्दिर की दिशा की ओर मुँह करके बैठते हैं। थोड़ी देर ही सही, मगर उसी ओर शहनाई का प्याला घुमा दिया जाता है और भीतर की आस्था रीड के माध्यम से बजती है।

अक्सर खाँ साहब कहते हैं, क्या करें मियाँ, इस काशी को छोड़कर कहाँ जायें, गंगा मैया यहाँ, बाबा विश्वनाथ यहाँ, बालाजी का मन्दिर यहाँ, यहाँ हमारे खानदान की कई पुश्तों ने शहनाई बजाई है। जिस जमीन ने हमें तालीम दी, जहाँ से अदब पाई वो और कहाँ मिलेगी? शहनाई और काशी से बढ़कर कोई जन्नत नहीं, इस धरती पर हमारे लिए, बिस्मिल्ला खाँ सादगी पसंद और वास्तविक अर्थ में एक सच्चे इंसान थे। किसी दिन एक शिष्या ने डरते हुए खाँ साहब से कहा—"बाबा आप! यह क्या करते हैं, इतनी प्रतिष्ठा है आपकी। अब तो आपको भारत-रत्न भी मिल चुका है, फटी तहमद न पहना करें।" तब खाँ साहब ने मुस्कराकर कहा—"धत्! पगली ई भारत-रत्न हमको शहनाई पे मिला है, लुँगिया पे नाहीं।" उनका मानना था कि वे मालिक से यही दुआ करते हैं कि, "फटा सुर न बख्शें। लुँगिया का क्या है? आज फटी है, तो कल सी जाएगी।"

सन् 2000 की बात है काशी पक्का महाल से जैसे मलाई बरफ गया, संगीत, साहित्य और अदब की बहुत सारी परंपराएँ लुप्त हो गईं। एक सच्चे सुर साधक और सामाजिक व्यक्ति की भाँति बिस्मिल्ला खाँ साहब को इन सबकी कमी खलती है। काशी में जिस तरह बाबा विश्वनाथ और बिस्मिल्ला खाँ एक-दूसरे के पूरक हैं, उसी प्रकार मुहर्रम-ताजिया और होली-अबीर-गुलाल की, गंगा-जमुनी संस्कृति भी एक-दूसरे के पूरक रहे हैं।

काशी आनंदकानन है। सबसे बड़ी बात है कि काशी के पास उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ जैसा लय और सुर की तमीज़ सिखाने वाला नायाब हीरा रहा, जो हमेशा से दो क़ौमों को एक होने व आपस में भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देता रहा।

भारत-रत्न से लेकर अनेक विश्वविद्यालयों की मानद उपाधियों से अलंकृत व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार एवं पद्मविभूषण जैसे सम्मानों से नहीं, बल्कि अपनी अजेय संगीत यात्रा के लिए बिस्मिल्ला खाँ साहब भविष्य में हमेशा संगीत के नायक बने रहेंगे। उन्होंने पूरे अस्सी वर्ष तक संगीत को संपूर्ण व एकाधिकार से सीखने की जिजीविषा को अपने अंदर सँजोए रखा। 21 अगस्त, सन् 2006 को खाँ साहब ने संगीत रसिकों की हार्दिक सभा से विदाई ले ली।

शब्दार्थ

ड्योढ़ी—दहलीज़; **नौबतखाना**—प्रवेश द्वार के ऊपर मंगल-ध्वनि बजाने का स्थान; **रियाज़ करना**—अभ्यास करना (शहनाई बजाने का); **इबादत**—प्रार्थना; **वाज़िब**—उचित; **रियासत**—जागीरदारी; **मसलन**—अर्थात्; **आसक्ति**—लगाव; **परिवेश**—वातावरण; **प्रतिष्ठित**—सम्मानित; **सम्पूरक**—समान; **नेमत**—ईश्वरीय देन; **सजदा**—सिर झुकाकर ईश्वर को नमस्कार करना; **तासीर**—प्रभाव; **मेहरबान**—दयालु; **मुराद**—मनोकामना,

इच्छा; **ऊहापोह**—उठा-पटक, अनिश्चिता। **तिलिस्म**—जादू; **अज़ादारी**—नमाज अदा करना; **शिरकत करना**—सम्मिलित करना; **निषेध**—रोक; **शहादत**—बलिदान; **पुनर्जीवित**—दोबारा जीवित होना; **गमज़दा**—दु:खों से भरा हुआ; **सुकून**—शांति; **बाल-सुलभ**—बच्चों के समान; नैसर्गिक—प्राकृतिक; **आँखें चमकना**—बहुत अधिक खुश होना; **मेहनताना**—पारिश्रमिक; **आरोह-अवरोह**—स्वर में उतार-चढ़ाव; **हाथ लगना**—मिल जाना; **उत्कृष्ट**—श्रेष्ठ; **मज़हब**—धर्म; **अपार**—अधिक; **आस्था**—विश्वास; **पुश्तें**—पीढ़ियाँ; **तालीम**—शिक्षा; **जन्नत**—स्वर्ग; **तहज़ीब**—तमीज, अच्छा व्यवहार; **ग़म**—दु:ख; **परवरदिगार**—परमेश्वर, अल्लाह; **नसीहत**—चेतावनी; **साज**—धुन; **बख्शना**—प्रदान करना; **लुप्त होना**—गायब हो जाना; **अफ़सोस**—दु:ख; **अलंकृत**—सुशोभित; **जिजीविषा**—जीने की इच्छा।

❑❑

'क्षितिज' भाग-2 (काव्य-खण्ड)

अध्याय - 1 पद — *सूरदास*

कवि-परिचय

जीवन परिचय—भक्ति काल की मुख्य-धारा के कृष्णभक्त कवि सूरदास का जन्म सन् 1478 में मथुरा के निकट रुनकता या रेणुका क्षेत्र में हुआ था, जबकि कुछ विद्वान मानते हैं कि सूरदास जी का जन्म-स्थान दिल्ली के पास सीही ग्राम है। सूरदास जी जन्मांध थे या बाद में नेत्रहीन हुए इस बारे में मतभेद की स्थिति है। एक मान्यता के अनुसार सूरदास जी मंदिरों में भजन-कीर्तन किया करते थे। एक बार जंगल से गुजरते समय सूखे कुएँ में गिर गए। तब स्वयं श्रीकृष्ण ने इन्हें कुएँ से बाहर निकालकर इन्हें दिव्य दृष्टि प्रदान की। ये अष्टछाप कवियों में प्रमुख तथा महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। सन् 1583 में पारसौली में इनका निधन हुआ।

प्रमुख रचनाएँ—सूरदास के सभी पद कृष्ण से सम्बन्धित हैं। उनकी प्रमुख रचनाएँ सूरसागर, सूरसारावली और साहित्य लहरी हैं। सूरसागर सबसे लोकप्रिय रचना है। कहा जाता है सूरसागर में सवा लाख पद से मात्र दस हजाार पद ही मिलते है।

भाषा-शैली—सूरदास ब्रज भाषा के कवि थे। सूर वात्सल्य और शृंगार के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। इनके सभी पद गेय हैं। सूरदास जी की भाषा सहज, सरल और स्वाभाविक है।

कविता का सार

सगुण भक्तिधारा के प्रमुख रचनाकारों में सूरदास जी का महत्वपूर्ण स्थान है। इनके पदों में गोपियों का श्रीकृष्ण के प्रति गहरा अनुराग प्रकट हुआ है। प्रस्तुत पदों में श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर उनके वियोग में व्याकुल गोपियों का वर्णन है। वे योग का संदेश लेकर आने वाले उद्धव को तरह-तरह के उपालंभ देती हैं।

पहले पद में गोपियाँ उद्धव को संबोधित करते हुए कहती हैं—हे उद्धव! तुम बहुत सौभाग्यशाली हो, जिसने अपने जीवन में कभी प्रेम नहीं किया। केवल हम ही मूर्ख हैं, जो कृष्ण के प्रेम में दिन-रात मगन रहती हैं। उनके प्रेम से अलग होना अब हमारे वश में नहीं है, क्योंकि जिस प्रकार चींटी गुड़ से चिपकी रहती है, उसी प्रकार हम भी श्री कृष्ण के प्रेम में लिपटी हुई हैं।

दूसरे पद में गोपियाँ कृष्ण को निष्ठुर बताती हुई उद्धव से कहती हैं—हम तो कृष्ण के आने की आस से ही अपने मन को सँभाले बैठी थीं, परन्तु कृष्ण ने स्वयं न आकर यह योग-संदेश भेजा है, जिसे सुनकर हमारे साँसों की डोर हमारे हाथ से छूटती जा रही है। उनके दर्शन के लिए ही हमारी साँसें अटकी हुई थीं। कृष्ण के इस वियोग संदेश को सुनकर अब किसी प्रकार का धैर्य नहीं रखा जाता।

तीसरे पद में गोपियाँ कृष्ण को अपना जीवनाधार बताते हुए कहती हैं कि जिस प्रकार हारिल पक्षी अपने मुँह में तिनका पकड़े रहता है, उसे छोड़ता नहीं, उसी प्रकार वे दिन-रात कृष्ण का नाम रटती रहती हैं। उन्हें योग का संदेश कड़वी ककड़ी के समान कड़वा लगता है। वे कहती हैं—योग का मार्ग उन्हीं के लिए ठीक है, जिनके मन में कृष्ण के प्रति प्रेम न हो।

चौथे पद में गोपियाँ कृष्ण पर व्यंग्य करती हुई कहती हैं—ऐसा प्रतीत होता है कि कृष्ण पूर्ण राजनीतिज्ञ हो गए हैं। वे चतुर तो पहले ही थे, परन्तु अब तो राजनीति के दाँव-पेंच भी सीख गए हैं। पहले के राजनीतिज्ञ जनता की भलाई के लिए कार्य करते थे, परन्तु अब तो वे स्वयं ही अन्याय करने लगे हैं। कृष्ण योग का संदेश भेजकर हम पर अन्याय ही कर रहे हैं। उनका यह व्यवहार राजधर्म के बिल्कुल विपरीत है।

शब्दार्थ

बड़भागी—भाग्यवान; **अपरस**—अलिप्त, अछूता; **तगा**—धागा; **पुरइनि पात**—कमल का पत्ता; **दागी**—दाग; **माहँ**—में; **प्रीति नदी**—प्रेम की नदी; **पाउँ**—पैर; **बोर्‌यौ**—डुबोया; **परागी**—मुग्ध होना; **अधार**—आधार; **आवन**—आगमन; **बिथा**—व्यथा; **बिरह दही**—विरह की आग में जल रही है; **हुतीं**—थीं; **गुहारि**—रक्षा के लिए पुकारना; **जितहिं तैं**—जहाँ से; **उत**—उधर; **धीर**-धैर्य; **मरजादा**—मर्यादा; **न लही**—नहीं रही; **जक री**—रटती रहती है; **सु**—वह; **करी**—भोगा; **मधुकर**—भौरा; **पठाए**—भेजा; **पाइहै**—पा लेंगी; **विनहिं**—उनको।

❑❑

अध्याय - 2 राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद — *तुलसीदास*

कवि-परिचय

जीवन परिचय— भक्तिकालकी सगुणधारा की अन्तर्गत आने वाली रामभक्तिशाखा के कवियों मे सर्वश्रेष्ठ कवि और लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास का जन्म 1532 ई. में उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दूबे एवं माता का नाम हुलसी था। एक जनश्रुति के अनुसार माता की मृत्यु और पिता के द्वारा त्याग दिए जाने पर इनका पालन-पोषण प्रसिद्ध सन्त बाबा नरहरिदास ने किया। इन्होंने ही तुलसी को ज्ञान एवं भक्ति की शिक्षा प्रदान की। इनका विवाह एक ब्राह्मण-कन्या रत्नावली से हुआ था। कहा जाता है कि ये अपनी रूपवती पत्नी के प्रति अत्यधिक आसक्त थे। इस पर इनकी पत्नी ने इनकी भर्त्सना की, जिससे ये प्रभु-भक्ति की ओर उन्मुख हो गए। संवत् 1680 (सन् 1623 ई) में, काशी में इनका निधन हो गया।

रचनाएँ— श्री रामचरित मानस, विनयपत्रिका, कवितावली, गीतावली, श्री कृष्णगीतावली, दोहावली, जानकी-मंगल, पार्वती-मंगल, वैराग्य-सन्दीपनी तथा बरवै-रामायण आदि।

भाषा-शैली— तुलसी ने ब्रज एवं अवधी दोनों ही भाषाओं में रचनाएँ की। मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा के प्रभाव में विशेष वृद्धि हुई है। तुलसी ने अपने समय में प्रचलित सभी काव्य-शैलियों को अपनाया है। तुलसी ने चौपाई, दोहा, सोरठा, कवित्त, सवैया, बरवै, छप्पय आदि अनेक छंदो का प्रयोग किया है। तुलसी ने काव्य में अलंकारों का प्रयोग सहज स्वाभाविक रूप से किया है। रूपकों के वे सम्राट कहे जाते हैं।

कविता का सार

प्रस्तुत 'राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद' तुलसी दास द्वारा रचित 'रामचरित मानस' महाकाव्य के बालखण्ड में संकलित है। निम्नलिखित अंश में सीता के स्वंयवर के समय पर राम के द्वारा धनुष भंग हो जाने पर क्रोधित हुए परशुराम और राम-लक्ष्मण के मध्य हुए संवाद का वर्णन है।

जनकपुरी में हो रहे सीता-स्वयंवर में शिव धनुष के भंग (टूट) हो जाने के समाचार को सुनकर क्रोधित परशुराम स्वयंवर स्थल पर पहुँच जाते है। वहाँ पहुँचकर वह धनुष-भंग करने वाले को ललकारते है। परशुराम के क्रोध को शांत करने के उद्देश्य राम परशुराम से कहते है कि शिव-धनुष तोड़ने वाला कोई आपका दास ही होगा। राम के इस वचन को सुनकर परशुराम और अधिक क्रोध में बोले, जो सेवा का कार्य करता है वह सेवक होता है और जो शत्रु के समान करे वह कैसा सेवक/जिसने भी यह कार्य किया है, स्वत: ही सामने आ जाए नहीं तो सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम की इन बातों को सुनकर लक्ष्मण ने उनसे व्यंग्य भरे स्वर में कहा, "बचपन में तो उन्होंने ऐसे कितने ही धनुष तोड़ डाले तब तो किसी ने इस प्रकार क्रोध नही किया। फिर यह धनुष तो बहुत पुराना और कमजोर था जो छूते ही टूट गया। लक्ष्मण की इन बातों ने परशुराम के क्रोध को बढ़ाने के लिए आग में घी के समान कार्य किया। वे अत्यंत क्रोध में लक्ष्मण से बोले, "बालक समझकर मैं तेरा वध नहीं कर रहा हूँ। तू मूर्ख मुझे मुनि समझ रहा है। मैं धरती से क्षत्रियों का नाशक तथा बाल ब्रह्मचारी हूँ। अपने इस कठोर फरसे से मैने क्षत्रियों का नाश किया तथा सहस्रबाहु की भुजाओं को काट डाला। परशुराम की बड़बोली बातों को सुनकर उन्हें अपमानित करने के स्वर में लक्ष्मण ने उनसे कहा कि आप मुझे बालक समझकर भयभीत करने का प्रयास न करे। मैं आपको ब्राह्मण समझकर हाथ नहीं उठा पा रहा हूँ। वैसे भी हमारे कुल में देवता, ईश्वर भक्त, ब्राह्मण और गाय पर वीरता नहीं दिखाई जाती है। लक्ष्मण की बातों से अपमानित और क्रोधित परशुराम ने लक्ष्मण को इंगित करते हुए विश्वामित्र से कहा कि यह बालक सूर्यवंश पर कलंक के समान और वध करने के योग्य है। परशुराम की बात के प्रत्युत्तर में विश्वामित्र ने उनके कहा, "ऋषि-मुनि बालकों के दोषों की गणना नहीं करते हैं।" विश्वामित्र की बातों से प्रेरित होकर वह बोले कि आपके कारण मैं इस बालक को छोड़ रहा हूँ अन्यथा इसका वध कर गुरु-ऋण से मुक्त हो जाता। लक्ष्मण भी कहाँ चुप रहने वालों में से थे वह बोले, "माता-पिता का ऋण आपने अच्छी तरह चुका दिया। गुरु-ऋण शेष है, जिसके लिए आप चिंतित दिखाई देते हैं। इतने समय में तो उस ऋण का ब्याज भी बहुत बढ़ गया होगा। आप गणना करने वालों को बुला लिजिए। मैं थैला खोलकर सारा ऋण चुका दूँगा। लक्ष्मण के ऐसे वचनों को सुनकर परशुराम के क्रोध की ज्वाला और अधिक भड़क उठी और वह लक्ष्मण को मारने के लिए तत्पर हो उठे। तब श्री राम ने अपने शीतल वचनो से उनका क्रोध शांत कर दिया।

शब्दार्थ

संभुधनु—शिव धनुष; **भंजनिहारा**—तोड़ने वाला; **अरि**—शत्रु; **बिलगाऊ**—अलग; **अवमाने**—अपमान करने हुए; **लरिकाई**—बचपन; **छति**—हानि; **जून**—जीर्ण, पुराना; **रोसू**—गुस्सा; **सठ**—दुष्ठ; **जड़**—मूर्ख; **छेदनिहारा**—काटने वाला; **बिलाकु**—देखकर; **गर्भन्ह**—गर्भ के; **अर्भक**—बच्चे; **बिहास**—हँसकर; **मृदु**—कोमल; **कुठारु**—कुल्हाड़ी, फरसा; **फूँकि**—फूँक से; **पहारन**—पहाड़; **कुम्हड़बतिया**—काशीफल का फूल; **सरासन**—धनुष; **रिस**—गुस्सा; **सुराई**—वीरता; **छमहु**—क्षमा करें; **कौसिक**—विश्वामित्र; **निज**—अपने; **कलंकू**—दाग; **निरंकुसु**—स्वछंद; **असंकू**—निर्भक; **प्रतापु**—यश; **दुसह**—अलहनीय दुख; **गारी**—गाली; **कायर**—डरपोक; **हाँक**—जबरदस्ती; **धोस**—भयंकर; **उरिन**—ऋण मुक्त; **काढ़ा**—निकालना; **व्यवहरिआ**—हिसाब करने वाला; **विप्र**—ब्राह्मण; **सुभट**—योद्धा।

❑❑

अध्याय - 3 उत्साह, अट नहीं रही है — *सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—छायावाद के प्रमुख आधार-स्तम्भ सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1899 में बंगाल के महिषादल में हुआ। वे मूलत: गढ़ाकोला (जिला उन्नाव) उ. प्र. के निवासी थे। इनके पिता रामसहाय त्रिपाठी महिषादल रियासत में कोषाध्यक्ष के पद पर तैनात थे। निराला ने कक्षा नौवीं तक पढ़ाई महिषादल में ही की। इनका पारिवारिक जीवन दु:खों व संघर्षों से भरा था। रामकृष्ण परमहंस और विवेकानंद की विचारधारा ने उन पर विशेष प्रभाव डाला। सन् 1961 में इनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकरमुत्ता, बेला नए पत्ते आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। निराला रचनावली के आठ खंडों में उनका सम्पूर्ण साहित्य प्रकाशित है। अपने निरूपमा, अलका, अप्सरा, प्रभावती आपके प्रमुख उपन्यास हैं।

भाषा-शैली—निराला जी विस्तृत सरोकारों के कवि हैं। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के जगत में नए प्रयोगों की शुरुआत की। उन्होंने कविता को छन्द बन्धन से मुक्त कर मुक्त छन्द का प्रयोग किया। उनकी कविता में परिमार्जित तत्सम शब्दों के साथ बोलचाल की भाषा का भी प्रयोग हुआ।

कविता का सार

उत्साह—उत्साह एक आह्वान गीत है जिसके माध्यम से कवि ने बादल को सम्बोधित किया है। कविता में बादल एक तरफ पीड़ित-प्यासे जन की अभिलाषा को पूरा करने वाला है, तो दूसरी तरफ बादल नयी कल्पना और नए अंकुर के लिए विप्लव, विध्वंस और क्रांति चेतना करने वाला भी है। कविता में ललित कल्पना और क्रांति-चेतना दोनों हैं। कवि निराला जी ने बादल के माध्यम से मानव को प्रोत्साहित किया है।

अट नहीं रही है—इस कविता में फागुन मास की सुन्दरता का मोहक वर्णन किया गया है। फागुन मास की शोभा इतनी अधिक है कि इस सुन्दरता से आँखें नहीं हट पा रही हैं। कहीं मादक हवाएँ चल रही हैं, कहीं आकाश में पक्षी उड़ रहे हैं, कहीं वृक्षों व पौधों पर नए पत्ते व फूल खिले हैं। फागुन मास की शोभा इतनी अधिक है कि वह संसार में समा नहीं पा रही है।

शब्दार्थ

धाराधर—बादल; **उन्मन**—अनमना; **निदाघ**—गर्मी; **सकल**—सारे; **आभा**—चमक; **वज्र**—(कठोर) इन्द्र का आयुधड़, भीषण; **अट**—समाना; **पाट-पाट**—जगह-जगह; **शोभा-श्री**—सौंदर्य से भरपूर; **पट**—समा नहीं रही है; **ललित**—सुंदर; **नूतन**—नई; **उर**—हृदय; **विकल**—परेशान; **अनंत**—जिसका अंत न हो, आकाश; **शीतल**—ठंडा।

❑❑

अध्याय - 4 यह दंतुरित मुस्कान, फसल — *नागार्जुन*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—आधुनिक काल के नव-चेतना के कवि नागार्जुन का जन्म सन् 1911 में बिहार राज्य के दरभंगा जिले के सतलखा नामक ग्राम में हुआ था। उनका मूल नाम वैद्यनाथ या वैद्यनाथ मिश्र था। उन्होंने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा संस्कृत में प्राप्त की। उन्होंने शिक्षा बनारस व कोलकाता से प्राप्त की। उन्होंने सन् 1936 में बौद्ध धर्म की दीक्षा ले ली। उनके जीवन पर राहुल सांकृत्यायन और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का भी प्रभाव पड़ा। सन् 1998 में उनका देहांत हो गया। दीक्षा लेने के उपरांत उनका नाम नागार्जुन पड़ गया। सन् 1998 में उनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—युगधारा, सतरंगे पंखों वाली, तुमने कहा था, मैं मिलटरी का बूढ़ा घोड़ा, आखिर ऐसा क्या कह दिया मैंने, आदि उनकी प्रमुख काव्य रचनाएँ हैं। नागार्जुन कवि होने के साथ उपन्यासकार आलोचक आदि भी थे। उनका सम्पूर्ण कृतित्त्व नांगार्जुन रचनावली" के सात खंडों में प्रकाशित है।

भाषा-शैली—हिन्दी, मैथिली के साथ नागार्जुन ने बांग्ला व संस्कृत में भी कविताएँ लिखी। व्यंग्य में माहिर होने के कारण उन्हें आधुनिक कबीर भी कहा जाता है। उन्होंने मुक्त छन्द की अतुकांत कविताएँ अधिक लिखी। वे प्रगतिवादी कवि माने जाते हैं।

कविता का सार

यह दंतुरित मुसकान—कवि शिशु की मनोहारी दंतुरित मुसकान को देखकर कहता है कि उसकी मुसकान मृतकों में भी जान डाल देती है। उसका धूल से सना शरीर ऐसे लगता है मानो झोंपड़ी में कमल खिल उठे हों और बाँस-बबूल के पेड़ों से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

शिशु की दंतुरित मुसकान से पत्थर भी मानो पिघलकर जलधारा बन सकते हैं।

पहली बार में शिशु ने कवि को पहचाना नहीं परन्तु जब उसकी माँ ने कवि से उसका परिचय कराया, तो वह (शिशु) पहले तो कवि को कनखियों से देखने लगा और फिर नजरें मिलने पर मुसकराने लगा।

फसल—कवि ने फसल को कृषक के परिश्रम, मिट्टी के गुण-धर्म और नदियों के जल का परिणाम बताया है। लाखों-करोड़ों व्यक्तियों के हाथों का स्पर्श, नदियों के पानी का जादू व मिट्टी अपने गुण-धर्म के अनुसार फसल को गरिमा प्रदान करते हैं।

शब्दार्थ

दंतुरित—बच्चों के नए-नए दाँत; **धूलि-धूसर गात**—धूल मिट्टी से सने अंग-प्रत्यंग; **जलजात**—कमल का फूल; **अनिमेष**—बिना पलक झपकाए लगातार देखना; **इतर**—दूसरा; **कनखी**—तिरछी निगाह से देखना; **छविमान**—सुन्दर; **आँखें चार**—आँखें मिलाना; **छविमान**—सुन्दर; **मृतक**—मरे हुए; **परस**—स्पर्श; **पाषाण**—पत्थर।

❑❑

अध्याय - 5 छाया मत छूना — *गिरिजा कुमार माथुर*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय : आधुनिक काल के अग्रणी कवि श्री गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन् 1918 में गुना, मध्य प्रदेश में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा झाँसी, उत्तर प्रदेश में हुई। इन्होंने लखनऊ से अंग्रेजी में एम.ए किया और एल.एल.बी की उपाधि अर्जित की। इन्होंने कुछ समय तक वकालत की और बाद में आकाशवाणी और दूरदर्शन में कार्यरत हुए। पिता ब्रजभाषा के कवि थे। अत: इनकी कविताओं पर भी ब्रजभाषा का प्रभाव है। कविता लिखने की प्रेरणा इन्हें अपने परिवार से ही प्राप्त हुई। इनका देहावसन सन् 1994 में हुआ।

रचनाएँ : नाश और निर्माण, धूप के धान, शिलापंख चमकीले, भीतरी नदी की यात्रा, जन्म कैद, सीमाएँ और संभावनाएँ।

भाषा-शैली : गिरिजाकुमार माथुर का काव्य नवीनता से पूर्ण है। वे विषय की मौलिकता के पक्षधर तो हैं परंतु शिल्प की विलक्षणता को नज़दरअंदाज़ करके नहीं। चित्र को स्पष्ट करने के लिए आप वातावरण के रंग को भरते है। इनकी काव्य भाषा में सहजता है। इन्होंने अधिकतर वर्णनात्मक और वैचारिक शैली का प्रयोग किया है और अपनी बात को स्पष्ट करने के लिए उक्तियों का सहारा लिया है।

कविता का सार

प्रस्तुत कविता 'छाया मत छूना' के माध्यम से कवि ने जीवन में विद्यमान सुख और दु:ख की समान उपस्थिति का वर्णन किया है।

कवि कहता है कि बीते हुए सुख को याद करके वर्तमान में प्राप्त दु:ख को ओर अधिक बढ़ाना उचित नहीं है। वह मनुष्य को अतीत की स्मृतियों में जीने के स्थान पर यर्थाथ और वर्तमान को अपने अनुकूल बनाने की प्रेरणा देता है। कवि अपने मन को आलंबन बनाकर संसार के सभी व्यक्तियों को प्रेरणा देते हुए कहता है कि जो समय बीत चुका है उसकी स्मृतियों के सहारे जीना उचित नहीं है। भूत की यादों में जीने से केवल दु:ख ही होगा। कवि अपनी प्रेयसी का उदाहरण देते हुए कहता है कि उसके साथ बिताया समय बहुत सुखद था किन्तु अब केवल उसकी स्मृतियाँ है। वह अब यर्थाथ नहीं है। वह एक ऐसी छाया के समान है, जिसमें उसे खोजने से केवल दु:ख ही प्राप्त होगा।

कवि कहता है कि मनुष्य यश, वैभव, सम्मान, धन को प्राप्त करने की जितनी अधिक इच्छा करता है और उन्हें प्राप्त करने के लिए जितना ज्यादा प्रयास करता है उतना ही वह भ्रमित होता चला जाता है। यह इच्छा मृगतृष्णा के समान है जो कभी यर्थाथ नहीं बन सकती अत: कल्पना के लोक में जीने से बेहतर है यर्थाथ को पहचानना और उसे अपने अनुकूल बनाने के लिए प्रयास। करना अन्यथा अतीत की स्मृतियाँ केवल दु:ख ही देंगी।

कवि आगे कहता है कि असमंजस के कारण निराश मन को अपना लक्ष्य दिखाई नहीं देता। यह निराशा स्वस्थ व्यक्ति के मन में भी दु:ख भर देती है। जिस प्रकार बसंत के बीत जाने पर फूल के खिलने का कोई प्रयोजन नहीं होता। अत: जीवन में जो प्राप्त नहीं हुआ उस पर शोक करने के स्थान पर भविष्य का निर्माण करो अन्यथा अतीत तुम्हें सालता ही रहेगा।

शब्दार्थ

छाया—परछाईं/भ्रम। **दूना**—दो गुना। **सुधियाँ**—स्मृतियाँ। **मनभावनी**—मन को अच्छी लगने वाली। **यामिनी**—रात। **कुंतल**—लंबे केश। **छुअन**—स्पर्श। **सरमाया**—पूँजी, धन। **भरमाया**—भ्रमित होना। **कृष्णा**—काली। **यथार्थ**—वास्तविक। **दुविधा**—असमंजस। **पंथ**—रास्ता। **वरण करना**—चुनाव करना।

❑❑

अध्याय - 6 कन्यादान — *ऋतुराज*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—अपने काव्य के माध्यम से समाज की विषमताओं को उजागर करने वाले कवि श्री ऋतुराज का जन्म सन् 1940 में भरतपुर (राजस्थान) में हुआ। इन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से अंग्रेजी विषय में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। चालीस वर्षों तक अंग्रेजी साहित्य के अध्यापन के बाद अब सेवानिवृत्ति लेकर ये जयपुर में रहते हुए हिन्दी साहित्य के कोष में वृद्धि कर रहे हैं। इन्हें सोमदत्त, तथा बिहारी पुरुस्कारों से सम्मानित भी किया जा चुका है।

भाषा-शैली : कवि ऋतुराज को अंग्रेजी व हिन्दी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार प्राप्त है। दैनिक-जीवन के शब्दों का प्रयोग होने के कारण इनकी भाषा बहुत सरल है। कवि सरल भाषा में भी गंभीर भावों को प्रकट करने में समर्थ है।

कविता का सार

'कन्यादान' कविता में एक माँ के माध्यम से कवि ने स्त्रियों को अपने परंपरागत 'आदर्शों' से हटकर जीवन जीने की सीख दी है।

माँ अपनी बेटी को उसके विवाह के समय उसे सीख देते हुए सावधान कर रही है। उसकी इस सीख में उसकी अंतर्वेदना छिपी हुई है। पुत्री के विवाह के समय माँ को होने वाली पीड़ा को समझाने के लिए किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। यह एक स्वाभाविक पीड़ा है। इस माँ के लिए उसकी बेटी ही उसकी अंतिम पूँजी है और उसे भी वह दान में दे रही है। माँ के अनुसार उसकी बेटी अभी सयानी नहीं हुई है विवाह के बाद होने वाली समस्याओं से वह अनजान है, वह बहुत भोली और सरल है। वह सुख की कल्पनाओं के लिए अपने दु:ख को प्रकट करना नहीं जानती है। वह बाह्य जीवन के सुख-दु:ख से अनजान है।

वह उसे समझाते हुए पानी में अपने सौन्दर्य को देखकर अधिक प्रसन्न होने के लिए कह रही है साथ ही वह उसे आग से सावधान करते हुए कह रही है कि आग खाना बनाने के लिए है जलने के लिए नहीं। वस्त्र और आभूषण शब्दों के भ्रमजाल के समान है, अत: उनके लालच में मत पड़ना। ये सब केवल बंधनों में बाँधते हैं। वह उसे समझाती है कि वह लड़की की मर्यादा में तो रहे परंतु इतनी भी भोली न रहे कि लोग उसका ग़लत फ़ायदा उठा पाए। हर तरह से सावधान और सजग रहे और जीवन की प्रत्येक परिस्थिति का धैर्य के साथ सामना करे।

शब्दार्थ

प्रामाणिक—सत्यापित, यथार्थ। **वक्त**—समय। **अंतिम**—आखिरी। **पूँजी**—संपत्ति। **सयानी**—समझदार। **आभास होना**—महसूस होना। **बाँचना**—समझाना। **पाठिका**—पढ़ने वाली। **रीझना**—मोहित होना। **भ्रम**—धोखा।

❑❑

अध्याय - 7 संगतकार — *मंगलेश डबराल*

कवि-परिचय

जीवन-परिचय—साहित्यकार मंगलेश डबराल का जन्म सन् 1948 में टिहरी गढ़वाल के काफलपानी नामक ग्राम में हुआ। इनकी शिक्षा-दीक्षा देहरादून में हुई। आरंभ में इन्होंने दिल्ली में 'हिन्दी पेट्रियट', 'प्रतिपक्ष' और 'आसपास' में काम किया और बाद में यह भारत भवन से प्रकाशित होने वाले 'पूर्वग्रह' नामक पत्रिका में सहायक संपादक के पद पर कार्य करने लगे। इन्होने कुछ समय तक इलाहाबाद और लखनऊ से प्रकाशित 'अमृत प्रभात' में भी कार्य किया। सन् 1983 में 'जनसत्ता' अखबार में साहित्य संपादक का पदभार सँभाला और कुछ समय तक 'सहारा समय' में भी संपादन कार्य किया। आजकल आप -नेशनल बुक ट्रस्ट' से जुड़े हुए है।

रचनाएँ—पहाड़ पर लालटेन, घर का रास्ता, हम जो देखते हैं, आवाज़।

भाषा-शैली—इनकी भाषा सहज एव सरल है। सहजता से भाव समझ में आने वाले शब्दों का प्रयोग आपकी विशेषता है। आपके काव्य में व्यंग्यात्मक और वर्णनात्मक शैली के दर्शन होते है।

कविता का सार

प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवि ने उन सहायक गायक कलाकारों के महत्त्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया है जो मुख्य गायकों के स्वर से अपना स्वर मिलाकर उनके स्वर को गति प्रदान करके सहायता प्रदान करते है; किन्तु कभी भी अपनी उन्नति का प्रयास नहीं करते है। इन सहायक गायक कलाकारों को संगतकार कहा जाता है।

कवि कहता है कि एक संगतकार मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर मिलाकर मुख्य गायक के स्वर को गति प्रदान करता है। उसके स्वर के भारी होने पर उसे सहायता प्रदान करता है। यहाँ तक कि मुख्य गायक का आत्मविश्वास डगमगाने पर भी संगतकार उसे धैर्य बँधाता है। इस प्रकार संगतकार सदैव मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाकर उसे जटिल तानों की उलझन से उभारता आया है। स्वर से भटकने पर वह अंतरा की मुख्य पंक्ति को पकड़कर मुख्य गायक को सँभालता है। संगतकार की ऐसी भूमिका होती है जैसे मुख्य गायक के बिखरे था छूटे हुए सामान को समेट रहा हो।

कभी-कभी ऊँचा स्वर लगाते समय जब मुख्य गायक का गला बैठने लगता है और उसकी प्रेरणा उसका साथ छोड़ने लगती है। ऐसे समय में संगतकार उसके स्वर में अपना स्वर मिलाता है जिससे मुख्य गायक को अकेलेपन का आभास न हो। ऐसा करते समय संगतकार की आवाज मे एक हिचक और संकोच होता है कि कहाँ उसकी आवाज मुख्य गायक की आवाज से ऊँची न हो जाए। इसलिए वह सदैव सतर्क रहता है। कवि के अनुसार अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से नीचा रखना संगतकार की विफलता नहीं अपितु उसकी मनुष्यता है।

शब्दार्थ

गरज—ऊँची गंभीर आवाज। **अंतरा**—गति की टेक। **जटिल**—कठिन। **लाँघकर**—पार कर। **समेटना**—एकत्र करना। **नौसिखिया**—नया-नया सीखने वाला। **सप्तक**—संगीत के सात स्वर। **अस्त होना**—छिप जाना। **ढाँढस बँधाना**—सांत्वना देना। **हिचक**—संकोच, झिझक। **विफलता**—असफलता।

❑❑

कृतिका, भाग-2

अध्याय - 1 माता का आँचल — *शिवपूजन सहाय*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—शिव पूजन सहाय का जन्म सन् 1893 में गाँव उनवास जिला-भोजपुर (बिहार) में हुआ। इनको बचपन में भोलाराम के नाम से पुकारा जाता था। इन्होंने दसवीं कक्षा पास करके बनारस की अदालत में नकलनवीस की नौकरी की। बाद में ये हिन्दी के अध्यापक पद पर कार्य करने लगे। इन्होंने असहयोग आंदोलन से प्रभावित होकर कुछ समय बाद सरकारी नौकरी से त्याग-पत्र दे दिया। ये अपने समकालीन लेखकों में प्रतिष्ठित व्यक्तित्व थे। सन् 1963 में इनका देहांत हो गया।

प्रमुख रचनाएँ—वे दिन वे लोग, स्मृति शेष, ग्राम सुधार, देहाती दुनिया आदि इनकी प्रमुख गद्य रचनाएँ है। शिवपूजन रचनावली नामक संग्रह में इनकी सम्पूर्ण रचनाएँ प्रकाशित हैं। ये 'मतवाला' के सम्पादक मंडल में भी थे।

भाषा-शैली—हिन्दी, फारसी तथा अंग्रेजी सभी भाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया है। खड़ी बोली हिन्दी में इन शब्दों ने उत्कृष्टता बढ़ाई। इनकी भाषा सहज, सरल तथा बोधगम्य है। इन्होंने बिम्बों व प्रतीकों का भी प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

पिताजी सुबह उठकर नहा-धोकर पूजा करने बैठ जाते थे। हमारा बचपन से ही उनसे लगाव हो गया था। माता से तो केवल दूध पीने तक का नाता था। यही वजह थी कि पिताजी के साथ हम बाहर की बैठक में सोया करते थे। वह अपने साथ ही हमें नहला-धुलाकर पूजा पर बिठा लेते थे। हम भभूत का तिलक लगाने की जिद्द करते तो हमारे ललाट पर भभूत से अर्ध-चंद्राकार रेखाएँ बना देते। सिर पर लम्बी-लम्बी जटाएँ थीं। भभूत लगने से हम अच्छे खासे बम भोला बन जाते थे।

हमारा नाम तारकेश्वर नाथ था, पर पिताजी हमें प्यार से 'भोलानाथ' कहकर पुकारा करते थे। हम भी उनको बाबू जी, माता को मइया कहते थे।

पिताजी की राम में आस्था—बाबू जी प्रतिदिन रामायण का पाठ करते थे। पूजा-पाठ कर चुकने के पश्चात् वह राम-राम लिखने लगते थे। अपनी एक 'रामनामा बही' पर हजार राम-राम लिखकर वह उसे पाठ करने की पोथी के साथ बाँधकर रख देते। फिर पाँच सौ बार कागज के छोटे-छोटे टुकड़ों पर राम-नाम लिखकर आटे की गोलियों में लपेटते और उन गोलियों को लेकर गंगा जी की ओर चल पड़ते थे। उस समय मैं भी उनके कंधों पर बैठकर उनके साथ जाता। जब वह एक-एक आटे की गोली पानी में फेंककर मछलियों को खिलाने लगते तब हम उनके कंधे पर बैठे-बैठे हँसा करते थे।

पिता के साथ बाल-सुलभ नोंक-झोंक—पिताजी हमसे कुश्ती लड़ते समय शिथिल होकर हमारे बल को बढ़ावा देते और हम उनको पछाड़ देते। वे जब पीठ के बल लेट जाते तो उनकी छाती पर चढ़कर उनकी लम्बी-लम्बी मूँछें उखाड़ने लगते, तब वह हँसकर हमारे हाथों को मूँछों से छुड़ाकर उन्हें चूम लेते थे। पिताजी फिर हमसे खट्टा और मीठा चुम्मा माँगते और मीठा चुम्मा लेते समय अपनी दाढ़ी या मूँछ हमारे कोमल गालों पर गढ़ा देते थे। हम झुँझलाकर उनकी मूँछें नोचने लग जाते थे। इस पर वह बनावटी रोना रोने लगते और हम अलग खड़े-खड़े खिलखिला कर हँसने लग जाते थे।

बच्चों को बहला-फुसलाकर भोजन कराना—पिताजी अपने हाथ से फूल के एक कटोरे में गोरस और भात सानकर खिलाते थे। जब हम खाकर अंदर जाते तब मइया थोड़ा और खिलाने की हठ करती थीं। वे पिताजी से कहतीं, आप खिलाने का ढंग नहीं जानते, बच्चे को मुँह भर कौर खिलाना चाहिए। यह कहकर वह दही-भात सानती और अलग-अलग तोता, मैना, कबूतर, हंस, मोर आदि के बनावटी नाम से कौर बनाकर यह कहते हुए खिलाती जाती कि जल्दी खा लो, नहीं तो उड़ जायेंगे।

माँ द्वारा पुत्र को नहला कर तैयार करना—जब हम रस्सी में बँधा हुआ काठ का घोड़ा लेकर नंग-धड़ंग बाहर गली में निकल जाते तो मइया हमें अचानक पकड़कर एक चुल्लू कड़वा तेल हमारे सिर पर डाल देती थीं। हमारे रोने और बाबू जी के बिगड़ने पर भी हमें उबट कर ही छोड़ती थीं। फिर हमारी नाभि और ललाट में काजल की बिंदी लगाकर चोटी गूँथती और उसमें फूलदार लट्टू बाँधकर रंगीन कुर्ता-टोपी पहना देती थीं और हम कन्हैया बनकर बाबू जी की गोद में सिसकते हुए बाहर आ जाते थे।

खेल और खेल की सामग्री—हम खेल के साथियों के साथ तरह-तरह के नाटक करते। चबूतरे का एक कोना, नाटकघर बनता था। बाबू जी की नहाने की चौकी रंगमंच बनती, उसी पर कागज का चँदौआ तानकर मिठाइयों की दुकान लगाई जाती। उसमें चिलम के खोंचे पर कपड़े के थालों में ढेले के लड्डू, पत्तों की पूड़ी-कचौड़ियाँ, गीली मिट्टी की जलेबियाँ, फूटे घड़े के टुकड़ों के बताशे आदि मिठाइयाँ सजाई जातीं। मिठाई की दुकान बढ़ाने के बाद हम लोग घरौंदा बनाते थे, पानी के घी, धूल के पिसान और बालू की चीनी से हम लोग ज्योनार तैयार करते थे। हमीं लोग ज्योनार करते और हमीं लोगों की ज्योनार बैठती थी। तब बाबू जी भी धीरे से आकर, पाँत के अंत में, जीमने बैठ जाते तो उनको देखते ही हम लोग हँसकर घरौंदा बिगाड़कर भाग चलते थे।

कभी-कभी हम लोग बरात का जुलूस निकालते थे। कनस्तर का तंबूरा, टूटी चूहेदानी की पालकी, हम समधी बनकर बकरे पर चढ़ लेते और चबूतरे के एक कोने से चलकर बरात दूसरे कोने में जाकर दरवाजे पर लगती थी। फिर लड़कों की राय जमती कि खेती की जाए, चबूतरे पर घिरनी गड़ जाती और मूँज की बटी हुई पतली रस्सी में एक चुक्कड़ बाँध गराड़ी पर लटका दिया जाता और दो लड़के बैल बनकर 'मोट' खींचने लग जाते, चबूतरा खेत बनता, कंकड़ बीज और ठेंगा हल-जुआठा। बड़ी मेहनत से जोते-बोए और पटाए जाते। फसल तैयार होने में देर नहीं लगती और हम फसल काट लेते थे। ऐसे-ऐसे नाटक हम लोग बराबर खेला करते थे।

खेल में की जाने वाली शैतानी—हम लोगों की बाल-मण्डली अगर किसी दूल्हे के आगे-आगे जाती हुई ओहारदार पालकी देखती तब खूब जोर से चिल्लाने लगते थे—'रहरी मे रहरी पुरान रहरी, डोला के कानिया हमार मेहरी', ऐसा कहने पर एक बार बूढ़े वर ने हम लोगों को खदेड़कर ढेलों से मारा था। न जाने किस ससुर ने घोड़-मुँहा जमाई ढूँढ़ निकाला था।

हमारे साथियों में एक बड़ा ढीठ था। एक दिन हमें मूसन तिवारी मिल गए वे बूढ़े आदमी थे। उन्हें दिखाई कम देता था। बैजू के साथ हम लोगों ने भी उन्हें चिढ़ाना शुरू कर दिया-'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा-तब मूसन तिवारी ने पाठशाला जाकर गुरुजी से शिकायत की। हम लोग जैसे ही पाठशाला पहुँचे, गुरुजी के सिपाही हम लोगों पर टूट पड़े, बैजू तो भाग गया पर गुरुजी ने हमारी खूब खबर ली। बाबू जी यह खबर सुनते ही दौड़ते हुए पाठशाला गए और गुरुजी से चिरौरी करके हमें घर ले चले। रास्ते में साथी लड़कों का झुंड मिलते ही हम रोना-धोना भूल गए और मैं बाबू जी की गोद से उतरकर लड़कों की मंडली में मिलकर तान-सुर अलापने लगा।

माँ का आँचल—एक बार हम सभी बालकों ने एक टीले पर जाकर चूहे के बिल में पानी उलीचना शुरू कर दिया, तभी उस बिल से शिवजी का साँप निकल आया। हम सभी भय से रोते-चिल्लाते बेतहाशा भागे। कोई औंधा गिरा, किसी का सिर फटा, किसी का दाँत टूटा। हमारी सारी देह लहू-लुहान हो गई। पैरों के तलबे काँटों से छलनी हो गए। हम एक सुर से दौड़ते हुए मइया के पास चले गए। बाबू जी ने हमें बहुत पुकारा पर हमने उनकी एक न सुनी। हमें डर से काँपते देख मइया जोर से रो पड़ी। कभी हमें अंग भर दबाती और कभी हमारे अंगों को अपने आँचल से पोंछकर चूम लेती। हम केवल धीमे से सुर में "साँप....साँ..." कहते हुए मइया के आँचल में लुके चले जाते थे। हमारा सारा शरीर काँप रहा था। आँखें खुलती न थीं। मइया काँपते हुए होंठों को बार-बार निहार कर रोतीं और लाड़ से हमें गले लगा लेतीं। तभी बाबू जी दौड़कर आए और हमें मइया की गोद से अपनी गोद में लेने लगे पर हमने मइया के आँचल की प्रेम और शांति के चंदोवे की छाया न छोड़ी।

शब्दार्थ

मृदंग—एक तरह का वाद्य यंत्र; **तड़के**—प्रभात काल; **लिलार**—ललाट; **त्रिपुंड**—माथे पर लगाये जाने वाला आड़ी या अद्‌र्ध चंद्रकार रेखाओं का तिलक; **आइना**—दर्पण; **उतान**—पीठ के बल लेटना। **ठौर**—जगह, स्थान; **मरदुर**—महतारी, आदमी-औरत; **बोथकर**—सरावोर कर देना; **ज्योनार**—भोज, दावत; **चँदोआ**—छोटा शामियाना। **घरौंदा**—घर; **ओहार**—पर्दे के लिये डाला कपड़ा; **रहरी**—अरहर; **चिरौरी**—विनती; **छितराई**—फैल गई; **लहूलुहान होना**—खून से लथपथ होना; **ओसारा**—बरामदा; **कुहराम मचना**—शोर मच जाना।

❑❑

अध्याय - 2 जॉर्ज पंचम की नाक *— कमलेश्वर*

लेखक-परिचय

जीवन-परिचय—नई कहानी के प्रमुख रचनाकार कमलेश्वर जी का जन्म 6 जनवरी सन् 1932 में मैनपुरी (उ.प्र.) में हुआ। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. करने के पश्चात् तथा पत्रकारिता से लगाव के कारण इन्होंने कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया। इन्होंने दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर भी कार्य किया। इनका निधन 27 जनवरी, 2007 को दिल का दौरा पड़ने से हुआ।

प्रमुख रचनाएँ—सुबह, दोपहर, शाम काली आँधी, डाक बंगला, आगामी अतीत, कितने पाकिस्तान, जिन्दा-मुर्दे, खोई हई दिशाएँ, माँस का दरिया, एक सड़क सत्तावन गलियाँ आदि इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। आप कहानी पत्रिका सारिका के सम्पादक रहे तथा फिल्मों में पटकथाएँ भी लिखीं।

भाषा-शैली—इनकी भाषा शैली बहुत प्रौढ़ तथा प्रांजल है। भाषा सहज तथा चुटीली है। शब्द विन्यास बहुत उत्कृष्ट है। उर्दू, अंग्रेजी व आंचलिक शब्दों के प्रयोग से भाषा प्रवाह में योगदान मिला है।

पाठ का सारांश

इंग्लैण्ड की रानी एलिजाबेथ द्वितीय अपने पति के साथ हिन्दुस्तान पधारने वाली थीं। रोज लंदन के अखबारों से खबरें आ रही थीं कि शाही दौरे के लिए कैसी-कैसी तैयारियाँ हो रही हैं-रानी का दर्जी परेशान था कि हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और नेपाल के दौरे पर रानी कब क्या पहनेंगी? उनका सेक्रेटरी और जासूस भी उनसे पहले ही इस महाद्वीप का तूफानी दौरा करने वाले थे। ज़माना नया था इसलिए फोटोग्राफरों की फ़ौज तैयार हो रही थी।

इंग्लैण्ड की खबरें हिन्दुस्तानी अखबारों में—इंग्लैण्ड के अखबारों की कतरनें हिन्दुस्तानी अखबारों में दूसरे दिन चिपकी नजर आती थीं, कि रानी के हल्के नीले रंग के सूट का रेशमी कपड़ा हिंदुस्तान से मँगाया गया है। जिस पर करीब चार-सौ पौंड का खर्चा आया है। अखबार में रानी की जन्मपत्री और प्रिंस फिलिप के कारनामे छपने के साथ ही उनके नौकरों, बाबर्चियों, खानसामों की जीवनियाँ तथा शाही महल के कुत्तों की तस्वीरें भी छप गईं। इन सभी खबरों से हिन्दुस्तान में सनसनी और राजधानी में तहलका मचा हुआ था।

नई दिल्ली का काया-कल्प—जो रानी पाँच हजार का सूट पहनकर पालम हवाई अड्डे पर उतरेगी, जिसके बाबर्ची भी महायुद्ध में लड़ चुके हैं, उसकी शान-शौकत के क्या कहने और वही रानी दिल्ली आ रही है। नई दिल्ली ने अपनी तरफ देखा और देखते-देखते नई दिल्ली की कायापलट होने लगी। किसी ने किसी से कुछ नहीं कहा, किसी को नहीं दिखा पर सड़कें जवान हो गईं, उन पर पड़ी बुढ़ापे की धूल शांत हो गई। इमारतों ने नाज़नीनों की तरह शृंगार कर लिया, पर दिल्ली की सबसे बड़ी मुश्किल थी—जॉर्ज पंचम की नाक। नई दिल्ली में सब कुछ था पर जॉर्ज पंचम की नाक नहीं थी।

जॉर्ज पंचम की नाक की दास्तान—जॉर्ज पंचम की नाक के लिए किसी वक्त आंदोलन हुए थे। राजनीतिक पार्टियों ने प्रस्ताव पास किए थे। अखबारों के पन्ने रंग गए थे। बहस इस बात पर थी कि जॉर्ज पंचम की नाक रहने दी जाए या हटा दी जाए। इसके लिए हथियारबंद पहरेदार तैनात कर दिए गए थे, क्या मजाल कि कोई उसकी नाक तक पहुँच जाए उसी समय यह प्रस्ताव हुआ कि हथियारबंद पहरेदार अपनी जगह तैनात रहें, गश्त लगती रही और इंडिया गेट के सामने वाली जॉर्ज पंचम मूर्ति की नाक गायब हो गई।

देश के खैर-ख्वाहों की मीटिंग—भारत में रानी आए और नाक न हो, यह बहुत ही परेशानी का विषय था। देश के खैर-ख्वाहों की मीटिंग बुलायी गई और मसला पेश किया गया कि अगर यह नाक नहीं तो हमारी नाक नहीं रह जाएगी। उच्च-स्तर पर सलाह-मशविरा करने के पश्चात् यह तय किया गया कि एक मूर्तिकार को हुक्म दिया जाए कि वह दिल्ली में हाज़िर हो। हुक्मरानों के बदहवास चेहरे देख मूर्तिकार की आँखों में आँसू आ गए तभी उसे आवाज़ सुनाई दी, "मूर्तिकार! जॉर्ज पंचम की नाक लगानी है।" मूर्तिकार ने सभी को आश्वस्त करते हुए कहा कि नाक लग जाएगी पर यह मालूम होना चाहिए कि लाट कब और कहाँ बनी? इस लाट का पत्थर कहाँ से लाया गया था।

लाट में प्रयुक्त होने वाले पत्थर की खोज—देश के हुक्मरानों ने एक क्लर्क को फोन कर इस बात की पूरी छानबीन करने का काम सौंप दिया। पुरातत्व विभाग की फाइलों के पेट चीरे गए पर कुछ भी पता नहीं चला। क्लर्क ने कमेटी के सामने बयान दिया कि मुझे माफ किया जाए साहब, फाइलें सब कुछ हजम कर चुकी हैं। हुक्मरानों के चेहरों पर फिर से उदासी छा गई।

मूर्तिकार को फिर से बुलाया गया, उसने मसला हल करते हुए कहा-मैं हिन्दुस्तान के हर पहाड़ पर जाऊँगा और ऐसा ही पत्थर खोजकर लाऊँगा। मूर्तिकार हिन्दुस्तान के पहाड़ी प्रदेशों और पत्थरों की खानों के दौरे पर निकल पड़ा।

कुछ दिन बाद वह हताश होकर लौट आया और उसने खबर दी कि—"हिन्दुस्तान का चप्पा-चप्पा खोज डाला पर इस किस्म का पत्थर कहीं नहीं मिला। यह पत्थर विदेशी है।" सभापति की डाँट खाने के पश्चात् मूर्तिकार ने एक सुझाव दिया, जिसे सुनकर सभापति की आँखों में चमक आ गई। मूर्तिकार ने कहा—"देश में अपने नेताओं की मूर्तियाँ भी हैं, अगर इजाजत हो तो जिसकी नाक इस लाट पर ठीक बैठे, उसे उतार लाया जाए"। सभापति का आदेश पाकर मूर्तिकार फिर देश के दौरे पर निकल पड़ा। जॉर्ज पंचम की नाक का माप उसके पास था। वह दिल्ली

से बम्बई, गुजरात, बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश से होकर मद्रास, मैसूर, केरल आदि सभी प्रदेशों का दौरा करता हुआ पंजाब पहुँचा। उसने गोखले, तिलक, शिवाजी, गाँधीजी, सरदार पटेल, गुरुदेव, सुभाषचंद्र बोस, चन्द्रशेखर आजाद, बिस्मिल, मोतीलाल नेहरू, सत्यमूर्ति लाला लाजपतराय तथा भगतसिंह की लाटों को देखा-परखा, पूरे हिन्दुस्तान की परिक्रमा कर आया, पर उसे जॉर्ज पंचम की नाक का सही माप कहीं नहीं मिला, क्योंकि जॉर्ज पंचम की नाक से सब बड़ी निकलीं। मूर्तिकार द्वारा दी गई खबर सुनकर सब हताश हो गए पर मूर्तिकार ने उन्हें ढाँढस बँधाते हुए कहा, "बिहार सेक्रेटरिएट के सामने सन् 1942 में शहीद होने वाले बच्चों की मूर्तियाँ स्थापित हैं, शायद बच्चों की नाक ही फिट बैठ जाए, यह सोचकर भी गया पर उन बच्चों की नाक भी जॉर्ज की नाक से बड़ी बैठी।" जब यह खबर बड़े हुक्मरानों तक पहुँची तो वहाँ खलबली मच गई, पर मूर्तिकार ने अपनी नई योजना सुनाने से पहले, जिस कमरे में कमेटी बैठी थी उसके दरबाजे बंद करवाए और अपनी योजना पेश की, "चूँकि नाक लगाना एकदम जरूरी है इसलिए मेरी राय है कि चालीस करोड़ में से कोई एक जिंदा नाक काटकर लगा दी जाए।"

थोड़ी देर कानाफूसी होने के बाद मूर्तिकार को इज़ाजत दे दी गई। अखबारों में बस इतना छपा कि नाक का मसला हल हो गया है पर मूर्तिकार खुद अपने बताए हल से परेशान था। जिन्दा नाक लगाने के लिए उसने कमेटी वालों से कुछ मदद माँगी वह उसे दी गई। जॉर्ज पंचम की नाक लग गई। सब अखबारों ने खबरें छापीं कि जॉर्ज पंचम के जिन्दा नाक लगाई गई है। यानी ऐसी नाक जो कि कतई पत्थर की नहीं लगती है।

उस दिन देश में कहीं भी किसी उद्घाटन की खबर नहीं थी। किसी ने कोई फीता नहीं काटा था। कोई सार्वजनिक सभा नहीं हुई थी, कोई मान पत्र भेंट करने की नौबत नहीं आई थी। किसी हवाई अड्डे या स्टेशन पर स्वागत समारोह नहीं हुआ था। किसी का ताजा चित्र नहीं छपा था। सब अखबार खाली थे। पता नहीं ऐसा क्यों हुआ था? नाक तो सिर्फ एक चाहिए थी और वह भी बुत के लिए।

शब्दार्थ

बेसाख्ता—स्वाभाविक रूप से; **ख़ानसामा**—रसोइया; **अचकचाया**—चौंक उठा; **कतई**—ज़रा भी; **लानत**—धिक्कार; **कौंधा**—अचानक आया; **लाचार**—धिक्कार; **बदहवास**—डरे हुए; **ख़ता**—भूल; **ताका**—देखा; **रहमत**—दया; **नाजनीन**—कोमल स्त्री; **मज़ाल**—साहस; **अजायबघर**—पुरानी चीजों के संग्रह का स्थान; **लाट**—मूर्ति; **कारनामा**—कार्य; **सनसनी**—खलबली; **पधारना**—आना।

❑❑

अध्याय - 3 साना-साना हाथ जोड़ि.... — *मधु कांकरिया*

लेखक-परिचय

जन्म-परिचय—लेखिका मधु कांकरिया का जन्म 23 मार्च 1957 को कोलकाता में हुआ। इन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया साथ ही कम्प्यूटर एप्लीकेशन में डिप्लोमा किया। मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता मिलती है। समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याएँ इनकी रचनाओं के विषय रहे है।

रचनाएँ—पत्ताखोर, सलाम आखिरी, खुले गगन के लाल सितारे, बीतते हुए, अंत में ईशु, व अनेक यात्रा वृतांत जैसे—साना-साना हाथ जोड़ि।

भाषा-शैली—इनकी भाषा बहुत प्रौढ़ तथा सहज है। शब्द विन्यास सटीक है। अधिकतर वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।

पाठ का सारांश

मधु जी की यात्रा की प्रेरणा—महानगरों व नगरों की भावशून्यता, भागमभाग और यंत्रवत जीवन पद्धति की ऊब मधु जी को दूर-दूर की यात्राओं को करने के लिए प्रेरित करती है। मधु जी ने उन्हीं यात्राओं के अनुभवों को अपने इस यात्रा-वृत्तान्त में शब्दबद्ध किया है। उन्होंने 'साना-साना हाथ जोड़ि.....' यात्रा वृत्तान्त में पूर्वोत्तर भारत के सिक्किम राज्य की राजधानी गंगटोक और उसके आगे हिमालय की यात्रा व उसके अनन्त सौंदर्य का काव्यात्मक वर्णन किया है।

गंगटोक—लेखिका ने गंगटोक को इतिहास और वर्तमान के संधि:स्थल पर खड़ा, मेहनती बादशाहों का शहर माना है, क्योंकि वहाँ के सभी लोग बड़े ही मेहनती हैं। इसलिए उस शहर का सब कुछ सुन्दर था, उसकी सुबह भी सुन्दर थी और शाम भी। खासकर लेखिका को गंगटोक की रहस्यमयी सितारों भरी रात ने सम्मोहित किया। वहीं पर उन्होंने एक नेपाली युवती से उन्हीं की भाषा में प्रार्थना के बोल सीखे, जो इस प्रकार हैं—"साना-साना हाथ जोड़ि, गर्दह प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसली" जिसका अर्थ है—छोटे-छोटे से हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो।

बौद्ध धर्म—गंगटोक से यूमथाँग को निकलते ही लेखिका को एक कतार में लगी सफेद-सफेद बौद्ध पताकाएँ दिखाई दीं जो ध्वज की तरह फहरा रही थीं। ये शान्ति और अहिंसा की प्रतीक थीं, इन पताकाओं पर मंत्र लिखे हुए थे।

लेखिका के गाइड ने उन्हें बताया कि जब किसी बौद्ध मतावलम्बी की मृत्यु होती है, तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी भी पवित्र स्थान पर एक सौ आठ श्वेत पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। इन्हें उतारा नहीं जाता है। कई बार नए शुभ कार्य की शुरुआत में भी रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं।

आगे चलकर मधु जी को एक कुटिया के भीतर घूमता हुआ चक्र दिखाई दिया जिसे धर्म चक्र या प्रेयर व्हील कहा जाता था। नार्गे ने बताया कि इसे घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। लेखिका ने महसूस किया कि मैदान हो या पहाड़, तमाम वैज्ञानिक प्रगतियों के बावजूद इस देश की आत्मा एक जैसी है।

हिमालय का अनन्त सौन्दर्य—लेखिका किसी से बातचीत किए बिना ही हिमालय के अद्‌भुत सौन्दर्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थीं। तभी उन्होंने खूब ऊँचाई से पूरे वेग के साथ सर्वोच्च शिखर से गिरता, फेन उगलता झरना देखा जिसका नाम था—'सेवन सिस्टर्स वाटर फॉल।' लेखिका ने जैसे ही उस झरने की जलधारा में पाँव डुबोया उनका मन काव्यमय हो उठा, उन्हें ऐसा लगा जैसे उनके अन्दर की तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ जल की निर्मल धारा में बह गईं। आगे बढ़ने पर उन्होंने पल-पल परिवर्तित होते हिमालय के सौंदर्य को देखा जहाँ सभी ओर जन्नत बिखरी पड़ी थी। पल भर में ही ब्रह्माण्ड में इतना सब कुछ घटित हो रहा था·····निरन्तर प्रवाहमान झरने, वेग से बहती तिस्ता नदी, सामने उठती धुँध, आवारा बादल, झूमते हुए प्रियुता और रूडो डेंड्रों के फूल सभी अपनी लय, तान और प्रवाह में नृत्य करते हुए प्रतीत हो रहे थे। हिमालय अब लेखिका के लिए कविता नहीं दर्शन बन गया था।

कटाओ की यात्रा—लेखिका बर्फ देखने के लिए बेचैन थी, तभी उन्हें किसी सिक्कमी युवक ने बताया कि अगर बर्फ देखनी है तो कटाओ जाना पड़ेगा। कटाओ को भारत का स्विट्जरलैण्ड कहते हैं। कटाओ पहुँचते ही बर्फ से ढके पहाड़ दिखाई देने लगे जो चाँदी की तरह चमक रहे थे, उन पर बर्फ साबुन के झाग की तरह सब ओर गिरी हुई थी। सभी सैलानी जो लेखिका के साथ थे जीप से उतरकर बर्फ पर कूदने लगे, पर लेखिका सोच रही थी कि शायद ऐसी ही विभोर कर देने वाली दिव्यता के बीच हमारे ऋषि-मुनियों ने वेदों की रचना की होगी। जीवन के सत्यों को खोजा होगा, 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' का महामंत्र पाया होगा। हिमालय की सम्पूर्णता का प्रतीक सौंदर्य ऐसा ही था कि बड़े से बड़े अपराधी को भी करुणा का अवतार 'बुद्ध' बना दे।

पहाड़ी महिलाओं की श्रमशीलता—हिमालय की यात्रा के दौरान लेखिका ने पाया कि इतने स्वर्गीय सौन्दर्य, नदी, फूलों, वादियों और झरनों के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिंदा रहने की इस जंग में पहाड़ी औरतों को हाथ में कुदाल और हथौड़ा लिए हुए पत्थर तोड़ते देखा। मेरे पूछने पर बोर्ड रोड ऑर्गनाइजेशन के एक कर्मचारी ने बताया कि जिन रास्तों से गुजरते हुए आप हिमशिखरों से टक्कर लेने जा रही हैं ये पहाड़िनें उन्हीं रास्तों को चौड़ा कर रही हैं। इनके हाथ में पड़े ठेक आम जिंदगी की कहानी कह रहे थे। ये कितना कम लेकर समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं। यहीं वेस्ट एट रिपेइंग है। ये पहाड़िनें घर का भी काम करती हैं और बाहर का भी। इनके कामों में गाय चराना, लकड़ियाँ काटकर उनके भारी भरकम गट्ठर को लाद कर ले जाना शामिल है।

फौजी छावनियाँ—लेखिका का सफर जब थोड़ा और आगे बढ़ा तो उन्हें वहाँ कुछ फौजी छावनियाँ दिखाई दीं, तभी उन्हें ध्यान आया कि यह बॉर्डर एरिया है थोड़ी ही दूर पर चीन की सीमा है। एक फौजी से मधु जी ने पूछा कि इतनी कड़कड़ाती ठंड में आपको बहुत तकलीफ होती होगी। उसने एक उदास हँसी हँसते हुए कहा—"आप चैन की नींद सो सकें, इसलिए तो हम यहाँ पहरा दे रहे हैं।"

लेखिका का मन उदास हो गया—वे सोचने लगीं कि वैशाख के महीने में इस बर्फीले स्थान पर हम पाँच मिनट में ही ठिठुरने लगेंगे। हमारे ये फौजी भाई पौष और माघ में भी तैनात रहते हैं, उस समय सिवाय पेट्रोल के सब कुछ जम जाता है, ऐसे समय में ये जवान हमारे देश की और हमारी सुरक्षा के लिए तैयार खड़े रहते हैं।

नार्गे एक कुशल गाइड—गंगटोक से लेकर हिमालय की यात्रा के दौरान नार्गे ने एक कुशल गाइड की तरह लेखिका और उनके साथियों का मार्ग निर्देशन किया। उसके अन्दर वे सभी खूबियाँ थीं जो एक कुशल गाइड के अन्दर होनी चाहिए, उसे गंगटोक से लेकर हिमालय तक की सभी ऐतिहासिक एवं भौगोलिक स्थिति का पूर्ण ज्ञान था। उसे कई तरह की भाषाओं का ज्ञान था। उसे अपने सैलानियों की रुचि का भी पूरा ध्यान रहता था।

शब्दार्थ

अतींद्रियता—इंद्रियों से परे। **उजास**—उजाला। **सम्मोहन**—मोहित होना। **कपाट**—दरवाजा। **अवधरणाएँ**—विचार। **रफ़्ता-रफ़्ता**—धीरे-धीरे। **ओझल**—दिखाई न देना। **वीरान**—सुनसान। **जल प्रपात**—झरना। **पराकाष्ठा**—चरमसीमा। **मशमूल**—व्यस्त। **अभिशप्त**—श्रापित। **शिद्‌दत**—बहुत अधिक इच्छा। **तामसिकता**—बुरी भावना, तमोगुण। **अनमनी**—उदास, बेमन से। **तंद्रिल अवस्था**—नींद की स्थिति। **सयानी**—समझदार। **चौरवेति-चौरवेति**—चलते रहो, चलते रहो। **वजूद**—अस्तित्व। **संर्जादा**—गंभीर। **गमगीन**—दुखी। **वेस्ट एंड रिपेइंग**—कम लेना और अधिक देना। **असह्य**—जो सहन न हो। **मद्‌धिम**—धीमे। **हलाहल**—विष। **रामरोछो**—अच्छा है। **ख़्वहिश**—इच्छा। **ठगा-सा रह जाना**—आश्चर्य चकित होना। **लम्हा**—पल, क्षण। **मियाद**—अवधि, सीमा। **आब्रोहवा**—जलवायु। **विस्मय**—आश्चर्य।

❑❑

खण्ड-घ (लेखन)

अध्याय - 1 निबन्ध-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

प्रश्न-पत्र में दिए किसी एक विषय पर अपने विचारों को सुसंगठित, स्पष्ट, सरल, सूत्रबद्ध रूप में व्यक्त करना निबन्ध की प्रमुख विशेषताएँ हैं। लिखने वाले को अपने विचारों को, अनुभवों को, मन के भावों को इस प्रकार व्यक्त करना चाहिए, जिससे पाठक का मनोरंजन हो एवं हृदय को शान्ति प्राप्त हो। व्यक्तिगत विचारों एवं तथ्यों को स्पष्ट करना ही अच्छे निबन्ध की मूल विशेषताएँ हैं।

लिखने से पूर्व निम्नलिखित रूपरेखाएँ प्रकट करना आवश्यक है—

(1) प्रस्तावना (भूमिका) (Introduction)

(2) विषय-वस्तु (Description)

(3) विस्तार (Extent)

(4) उपसंहार (Conclusion)।

(1) प्रस्तावना (भूमिका)—यह निबन्ध का प्रवेश द्वार होता है, जो पाठक को अपनी ओर आकर्षित करता है। प्रस्तावना (भूमिका) संक्षिप्त, सारगर्भित होनी चाहिए तथा आकर्षक और प्रभावोत्पादक हो। इसे प्रसंग के अनुकूल तथा उत्तम रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

(2) विषय-वस्तु—निबन्ध विषय के अनुरूप विचार बिन्दु निश्चित करके उन्हें तर्क पूर्ण रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। इसे कई अनुच्छेदों में बाँट करके उदाहरणों, सूक्तियों तथा काव्य-खण्डों आदि का प्रयोग करके रोचक तथा आकर्षक रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।

(3) विस्तार—निबन्ध के विषय का विस्तारपूर्वक सभी पहलुओं को स्पष्ट करते हुए सारगर्भित रूप में वर्णन करना चाहिए जिससे विषय वस्तु स्पष्ट हो जाए। अनावश्यक आवृत्ति न करें।

(4) उपसंहार—निबन्ध का यह अन्तिम पड़ाव होता है। इसमें सभी विचार बिन्दुओं को समेटकर निष्कर्ष रूप में प्रस्तुत करना चाहिए। इसमें निबन्ध के लाभ-हानि, सार भी दिया जा सकता है। कुल मिलाकर यह संक्षिप्त, आकर्षक तथा मन पर अमिट छाप छोड़ने वाला होना चाहिए।

अच्छे निबन्ध की विशेषताएँ

(1) किसी भी निबन्ध का कोई लिखित उद्देश्य तथा निश्चित विषय हो।

(2) निबन्ध की विषय-वस्तु का पहले से मनन कर लें तब उसे लिखित रूप दें।

(3) किसी भी निबन्ध का कोई निश्चित निष्कर्ष निकले।

(4) अपने विचारों को रोचक, आकर्षक एवं संक्षिप्त रूप में लिखें।

(5) वाक्य सरल, सीधे तथा स्वाभाविक हों।

(6) निबन्ध का विषय आकर्षक हो जिससे आदमी पढ़ते समय या सुनते समय ऊबे नहीं।

❑❑

अध्याय - 2 पत्र-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

पत्र लेखन आधुनिक युग की अपरिहार्य आवश्यकता है एक और वे समाजिक सम्बन्ध करते हैं, दूसरी और इनकी सामाजिक उपयोगिता है। पत्र लेखन एक कला है जो पत्र लेखक के व्यक्तित्व, हष्टिकोण मानसिकता को उजागर करती है।

पत्रों के प्रकार—पत्रों को दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है—

(1) वैयक्तिक पत्र

(2) निर्वैयिक्तिक पत्र

पत्राचार की सामान्य विशेषताएँ

यद्यपि मोबाइल के उपयोग से आज पत्र लेखक कम हो गया है पर समाप्त नहीं हुआ है एक अच्छे पत्र में निम्न विशेषताएँ होनी चाहिए।

1. पत्र में वैचारिक स्पष्टता हो।
2. पत्र में साल, सहज, व्यावहारिक भाषा प्रयुक्त हो।
3. कम शब्दों में ही बात कह सकने की क्षमता पत्र में होनी चाहिए।
4. पत्र में पुनरावृत्ति (दोहराव) नहीं होनी चाहिए।
5. पत्र को यथा संभव सरल, संक्षिप्त रखना चाहिए।

वैयक्तिक पत्र प्राय: परिस्थतियों, रिश्ते नातो द्वारा या मित्रों को लिखे जाते है। इनमें अनौपचारिकता होती है। अर्थात् इन्हें लिखने की कोई निश्चित शैली नहीं है।

प्रधानाचार्य एवं किसी अधिकारी को जो पत्र लिखे जाते हैं वे औपचारिक होते हैं यदि उनमें केवल काम की बात लिखी जाती हैं। विषय के अनुरूप पत्र व प्रारूप बदलता रहता है पत्र में प्रेषक, का पता होना आवश्यक है।

❑❑

अध्याय - 3 विज्ञापन-लेखन

स्मरणीय बिन्दु

वि (विशेष) + ज्ञापन (जानकारी देना) अर्थात् किसी के बारे में विशेष रूप से जानकारी देना ही विज्ञापन है।

आज का युग विज्ञापनों का युग है। रेडियो, दूरदर्शन, समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ आदि इसके मुख्य साधन हैं। विज्ञापन एक कला है और इसका अर्थ है कि उत्पादक अपने सामान की गुणवत्ता, सूचना, जानकारी और प्रसिद्धि को जन-जन तक पहुँचाता है। आज तो विज्ञापनों द्वारा अधिकतर व्यापार चलता है। विज्ञापनों के लिए आजकल तो कंप्यूटर की सहायता से बड़े ही आकर्षक डिजायन बनाए जाते हैं। तभी विज्ञापनों का हमारे लिए उपयोग और महत्व है।

विज्ञापन लेखन लिखते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए-

- विज्ञापन लगभग 25-50 शब्दों में ही लिखना चाहिए।
- विषय का आरंभ सीधा विषय से होना चाहिए।
- वाक्य छोटे-छोटे तथा आपस में जुड़े होने चाहिए।
- भाषा सरल तथा सार्थक होनी चाहिए। तुकदार शब्दों का प्रयोग विज्ञापनों की भाषा में होता है।
- अभ्यास तथा प्रयास से विज्ञापन लेखन में कुशलता प्राप्त की जा सकती है।

❑❑